अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

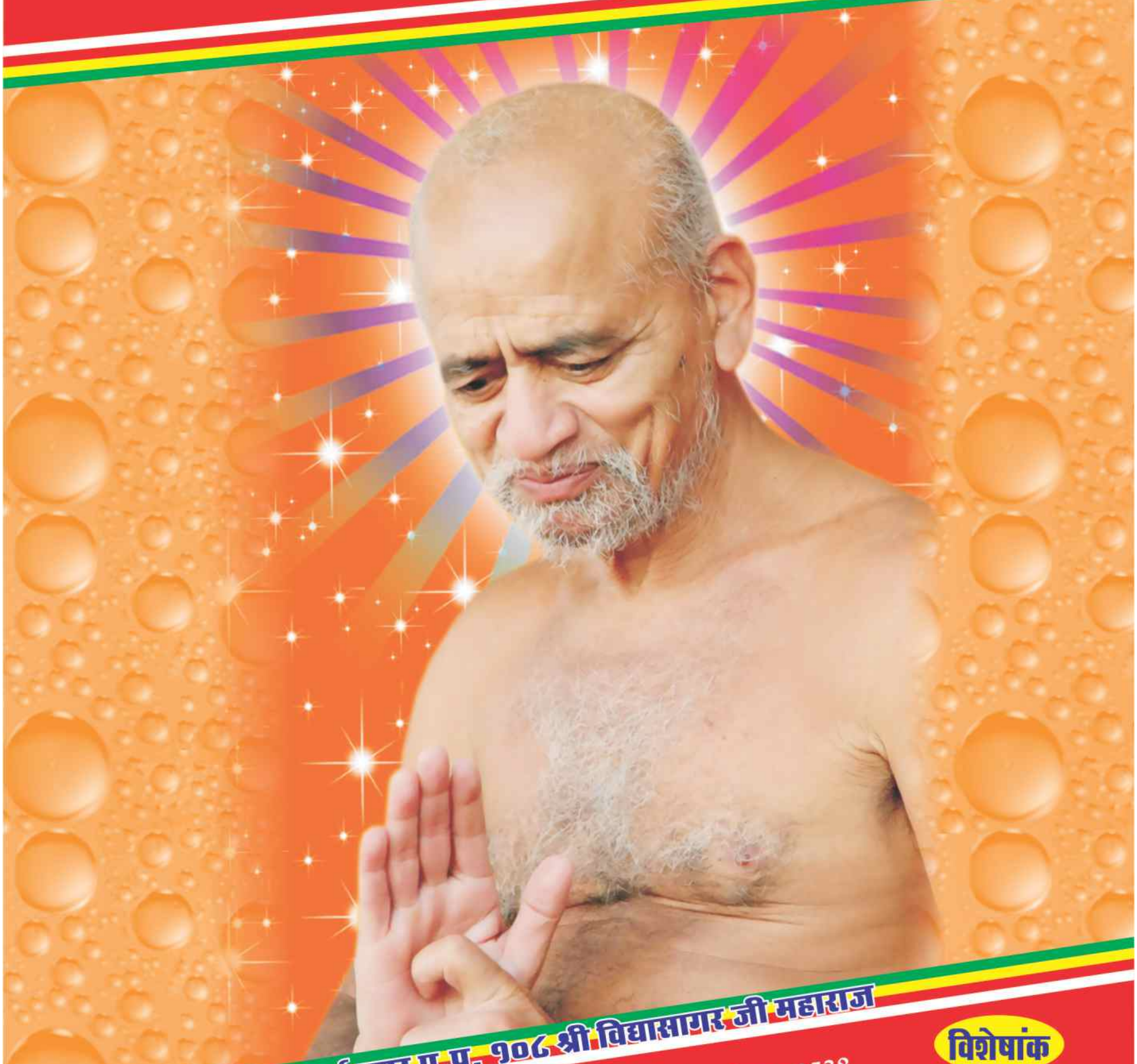

आचार्य प्रवर प.पू. १०८ श्री विद्यासागर जी महाराज

विशेषांक

वीर निर्वाण संवत् - 2538
पौष शुक्ल पक्ष, वि.सं. 2068, दिसम्बर 2011

वर्ष : पाँच
अंक : अठारह
मूल्य : 10/-

मूकमाटी

न निशाकर है, न निशा
न दिवाकर है, न दिवा
अभी दिशायें भी अन्धी है,
पर की नासा तक
इस गोपनीय वार्ता की गन्ध
.... जा नहीं सकती!
ऐसी स्थिति में
उनके मन में
कैसे जग सकती है
.... दुरभि-सन्धि वह!
और...... इधर....... सामने
सरिता ....
जो सरपट सरक रही है
अपार सागर की ओर
सुन नहीं सकती, इस वार्ता को
कारण!
पथ पर चलता है
सत्पथ-पथिक वह
मुड़कर नहीं देखता
तन से भी, मन से भी
और, संकोच-शीला
लाजवती लावण्यवती-
सरिता-तट की माटी
अपना हृदय खोलती है
माँ धरती के सम्मुख!

क्रमश.......

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

06 जनवरी	-	रोहिणी व्रत	14 फरवरी	-	भ. सुपार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक
08 जनवरी	-	षोडशकारण व्रत	18 फरवरी	-	भ. मुनिसुव्रत मोक्ष कल्याणक
22 जनवरी	-	भ. आदिनाथ मोक्षकल्याणक	27 फरवरी	-	भ. मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक
24-27 जनवरी	-	लब्धि विधान व्रत	29 फरवरी	-	भ. चन्द्रप्रभ मोक्ष कल्याणक
28 जनवरी	-	दशलक्षण/पुष्पांजली व्रत	01-08 मार्च	-	अष्टान्हिक व्रत
01 फरवरी	-	पुष्पांजली व्रत पूर्ण	22 मार्च	-	भ. अनंतनाथ व अरहनाथ मोक्ष कल्याणक
03 फरवरी	-	रोहिणीव्रत पूर्ण	23-26 मार्च	-	लब्धि विधान
05-07 फरवरी	-	रत्नत्रय व्रत	27 मार्च	-	भ. अजितनाथ मोक्षकल्याणक
06 फरवरी	-	दशलक्षण व्रत पूर्ण			दशलक्षण / पुष्पांजली व्रत
08 फरवरी	-	षोडशकारण व्रत पूर्ण	28 मार्च	-	भ. संभवनाथ मोक्षकल्याणक
11 फरवरी	-	भ. पद्मप्रभ मोक्ष कल्याणक	01 से 28 मार्च	-	रोहिणी व्रत

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री **डॉ. अजित जैन** 94256 01161

संयुक्त सचिव **अरविन्द जैन, पथरिया** दमोह

कोषाध्यक्ष **इंजी. महेन्द्र जैन**

उपाध्यक्ष **राजेश जैन 'रज्जन'** दमोह

अध्यक्ष **डॉ सुधीर जैन** 9425011357

सदस्य - **पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-पाँच
अंक-अठारह

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800
● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
फोन: 4221458, 9893930333, 9977557313
● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी,
भोपाल मो. 9425011357
● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)
● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल
● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं
रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. जीव-दया-दिवस — 2
''सम्पादकीय'' — श्रीपाल जैन 'दिवा'

2. विद्यासागर राह बताओ हो जाऊँ मैं भी भवपार — 3
पं. महावीर जैन

3. ध्यान की प्रसिद्धि में मन व आहार — 4
मुनि आर्जवसागर

4. जैन न्यायवादियों या न्यायविदों की गणितीय न्याय में पहुँच — 7
प्रो. एल.सी. जैन

5. सम्यक ध्यान शतक — 10
मुनि आर्जवसागर

6. गणितसार संग्रह — 11

7. जैन मन्दिरों को शिक्षा का केन्द्र बनाइए! — 14
प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन

8. ध्यान, आसन और आहार में मानस स्थिति — 16
डॉ. संजय जैन

9. दीक्षा जयन्ति 25 वां रजतवर्ष — 18

10. नसियाँजी में कवि सम्मेलन — 20
पदम ''सुरलाया''

10. समाधान — 21
हनुमान सिंह गूर्जर

11. मनाया हमने दीक्षा वर्ष महान — 22
श्रीमती संतोष विनायके

14. समाचार — 23

15. प्रश्नोत्तरी — 33

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

जीव-दया-दिवस

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

जगत का जीवन प्रकृति का वरदान है। उसका प्रत्येक परमाणु समता भाव से गतिशील है। गति में लय है, लय में सरलता है। सरलता के सद्भाव से कठोरता के अभाव की स्थिति बनती है। फलस्वरूप मसृणता का परिवेश-उपस्थित होता है। मसृणता ही स्निग्धता के उद्भव में सहयोगी बनती है। स्नेह के सुमन धरती पर खिलने लगते हैं। स्नेह में तरलता होती है। तरलता के निर्मल परमाणु पुँजों को अपना सा बनाने में सदैव सक्षम होते हैं और उन्हें तारते रहते हैं। सरलता की तरलता के घर कठोरता पानी भरती है, निर्दयता की दाल तो गलती ही नहीं और क्रूरता रफूचक्कर होकर अन्यत्र आश्रय खोजती फिरती है। हिंसा के हाहाकार के घर हाहाकार मच जाता है और अहिंसा का सुदर्शन चारों ओर चक्कर लगाकर अभयदान बाँटता हुआ शान्ति का बिगुल बजाता है।

प्रकृति में परमाणु के इलेक्त्राण अपने पथ से मुक्त होते हैं तो आवेश उत्पन्न होता है उदासीनता का अभाव होता है। हलचल प्रारम्भ हो जाती है। आर्कषण-विकर्षण का संसार शुरू हो जाता है जगत जगमगाता है और डगमगाता भी है। प्रकृति के अनुकूल आचार होने लगते हैं। अनुकूल आचार का संसार दया के संसार की सर्जना करता है और प्रतिकूल अतिचार का संसार हिंसा का संसार खड़ा कर देता है। मनुष्य ने प्रकृति के विपरीत आचरण कर सम्पूर्ण पर्यावरण को आन्दोलित किया है। सारे जीवों की जीवन-लीला से खेलने का दुस्साहस किया है। अर्थलोलुपता और जीभ के स्वाद के खातिर धरती की छाती पर कत्लगाहों का अम्बार लगा दिया है। मुर्गीपालन, मत्स्यपालन को खेती का खिताब देकर शब्दों के अर्थ से खिलवाड़ कर भाषा के भास्कर को कलंकित कर दिया है। वह अण्डों को शाकाहारी एवं फलाहारी घोषित कर अहिंसा का मजाक उड़ा रहा है। यह सब तमाशा सारी दुनिया देख रही है। परंतु आचार्य श्री विद्यासागर जी ने अहिंसा का झण्डा उठाने की मर्दानगी दिखाई है। उन्होंने हिंसा के विरोध में शंखनाद कर दुनिया को जगाने का संकल्प किया है। पशुवध बन्द करो-गोशाला निर्माण करो के नारे को बुलंद किया है। उनके अशीर्वाद से सैकड़ों गोशालाएँ स्थापित की गई हैं जिनमें हजारों पशुओं का पालन हो रहा है। उनके अभियान को सभी धर्म के साधु सन्तों एवं समाजों तथा उनके शिष्यों ने अपनाकर जीवों की रक्षा का बीड़ा उठाया है। सारे संसार में शाकाहार की लहर दौड़ गई है। धरती की छाती हरी भरी होकर दया से परिपूर्ण हो रही है। वर्तमान में आचार्य श्री का चालीसवाँ आचार्यपद दिवस सम्पूर्ण देश में उनके शिष्यों एवं भक्तों ने 12.11.11 को जीव-दया-दिवस के रूप में मनाया है। वस्तुतः आचार्य श्री का आचार्य पद दिवस को जीव-दया-दिवस के रूप में मनाया जाना सुनिश्चित कर दिया जाना चाहिए। जिससे जीवों की रक्षा का अभियान सदैव चलता रहे।

'जय जीव-दया-दिवस की'

विद्यासागर राह बताओ हो जाऊँ मैं भी भवपार

पं. महावीर जैन

परम दिगम्बर संत हमारे, विद्यासागर महिमावान,
विश्वधर्म के जयकारों से, जैनधर्म की रखते शान ।
गुणग्राही दर्शन के ज्ञाता निष्प्रह योगी गरिमावान,
विद्या वारिधि निर्मल साधक करते सदा स्वपर कल्याण ।।

अविकारी तपलीन तपस्वी, श्रुत अभ्यासी परम उदार,
दशधर्मों की सुन्दर प्रतिमा, सृजन करा साहित्य अपार।
''मूकमाटी'' महाकाव्य से झरते, तथ्यान्वेषी विज्ञ विचार,
समता समन्वय पथ के राही, करुणा के अद्‌भुत अवतार ।।

जिनवाणी के वरदपुत्र, बहुभाषाविद् ज्ञानी गुणवंत,
ज्ञानसागर गुरु शिक्षाओं से किये विवाद अनेकों अन्त।
संत शिरोमणी सजग तपस्वी, चौथेकाल से यति निर्ग्रन्थ,
तीर्थङ्कर के पथ पर चलकर, काट रहे हैं भव के कन्द ।।

दर्शन, वाणीअमृत पाकर मिलती है, सुख शांति अपार,
जगती पर वात्सल्य लुटाते शिष्य आपके गुण भण्डार ।
''विकल'' मन कैसे गा सकता, गुण है आपमें अपरम्पार,
विद्यासागर राह बताओ, हो जाऊँ मैं भी भवपार ।।

नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!

पिच्छिका - निर्माता

एक दिन पारस पारखी, गुरुवर ज्ञानसागर जी महाराज ने चुपके से अपनी पिच्छी के पंख बिखेर दिए और फिर सहज होकर बोले–विद्याधर! इस पिच्छिका पुनः बना सकते हो? न शब्द वहाँ था ही नहीं, सो हाँ कह दिया और विद्याधर ने शास्त्रों में वर्णित विद्याधरों की तरह शीघ्र ही पिच्छी बना डाली। गुरुजी ने पिच्छी देखी और देखते ही कह दिया –'ब्रह्मचारी, आपका ज्ञान सही में अब पिच्छी लेने योग्य हो चुका है।'

साभार : यादें विद्याधर की

ध्यान की प्रसिद्धि में मन व आहार

- मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

ध्यान के योग्य द्रव्य के प्रकरण में आहार द्रव्य पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। आहार शुद्ध और सात्विक होना चाहिए। आजकल आहार के क्षेत्र पर कोई ध्यान नहीं दे पाते हैं। जो भी बाजार में मिलते हैं तो ले आते हैं और बहुत रुचि लेकर खाते हैं पैसे भी बर्वाद करते हैं। वे अम्माजी जब उन दोनों व्रती पति-पत्नि के लिए अच्छे से आहार करा रही थीं। वे दोनों भी शोधन करते हुए भोजन ले रहे थे और ज्यों ही आहार पूरा हुआ त्यों ही ऊपर की ओर देखने लगीं तो वह चंदोवा पूरा सफेद हो गया और अहिंसा परमो धर्म की जय, शील धर्म की जय बोलने लगीं। धन्य हैं आज मेरा प्रायश्चित्त पूरा हुआ है, असिधारा व्रत वाले मेरे घर आये और जयकारा बोलती हुई घर तक छोड़ने के लिए गयीं। जय जयकार सुनकर लोग कहने लगे कि कोई महाराजजी आ गये हैं क्या? बाहर आकर देखा अरे! क्या हो गया जय जयकार क्यों बोल रही हो? बोला अरे! आज हमारा सौभाग्य है ऐसे महान असिधारा व्रत धारक ये बेटा, बहू हैं जिनका आज मेरे घर में आहार हुआ मेरा प्रायश्चित्त भी पूरा हुआ। असिधारा व्रत क्या कहलाता है? ऐसा पूछे जाने पर कहा कि तुम्हारे बेटा-बहू दोनों ब्रह्मचर्य व्रत से रहते हैं। अरे! मैं तो सोच रही थी कि संतानें नहीं हो रही हैं ऐसा कह करके वह सासू माथा ठोकने लगी ''मैं कितनी पापी हूँ''। सब लोगों ने सम्मान किया उन दम्पत्तियों का। अब क्या करना है? अब तो बहुत धर्म प्रभावना हो गई बहुत साधना कर ली। संसार तो हमें बढ़ाना नहीं परिवार तो रचाना नहीं इसलिए आप लोग हमें आज्ञा दे दें। हम जाकर अपना आत्म कल्याण करें। आज्ञा दी सबने। वह जाकर के अपने गुरु के पास मुनि दीक्षा लेकर विजयसागर बन गया और यह जाकर के अपनी गुरुणी के पास आर्यिका दीक्षा लेकर विजयामति बन गयी। दोनों ही महान बन गये। ध्यान साधना करने के लिए भोजन पर कन्ट्रोल रखना चाहिए। कम से कम रात में तो नहीं खायें। दिन भर मिला है खाने के लिए फिर भी रात को खाते हैं। लोग थोड़ा मुंह को विराम तो दे दें। पेट कहता है नो अडमिशन विदाउट परमिशन। फिर भी डालते जाते हैं। यह रात्रि भोजन नहीं करना जैनियों का प्रथम चिन्ह है। जैन धर्म के अनुसार रात में बहुत जीवों की उत्पत्ति होती है वह भोजन में गिर जाते हैं तो उसको सेवन करते समय उन जीवों का घात होने से मांस सेवन का दोष लगता है और विज्ञान के अनुसार भी रात में भोजन नहीं करना चाहिए। क्योंकि रात में अपनी जठराग्नि जो पाचन क्रिया में सहायक है वह मंद पड़ जाती है, आक्सीजन भी पर्याप्त मात्र में नहीं मिलती है और बुरे-बुरे स्वप्न आते हैं, सिरदर्द आदि भी हो जाता है। इसलिए रात को नहीं खाना चाहिए। चिड़ियाँ भी रात में नहीं खाती। खाने की बात तो दूर है, बोलती भी नहीं हैं। क्या हम व्रतों में चिड़िया से भी छोटे हैं कि बड़े हैं? सोचिए एक और उदाहरण सुनिये। कैसे तिर्यञ्चों ने भी व्रत को पालन किया। एक बार जंगल में बहुत प्यासा एक सियार भटक रहा

था। भटकते-भटकते उसको एक जगह धर्मामृत वर्षाते हुए एक मुनि महाराजजी मिल गये। गुरु महाराजजी वाणी में इशारे के साथ समझा रहे थे कि रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए। सूर्यास्त होने के बाद पानी भी नहीं पीना चाहिए। उसने अपने अन्दर व्रत को धारण कर लिया। फिर चल दिया। प्यासा था इसलिए यहाँ-वहाँ पानी को ढूँढ रहा था। तो एक कुँआ में उसको पानी दिखा और सीढ़ियाँ भी बनी हुयी थी। लेकिन बहुत गहरा था। उतरकर अन्दर गया तो अन्धेरा सा लगा तो वापिस ऊपर आया। अरे अभी तो प्रकाश है सूर्यास्त नहीं हुआ सोच करके वापिस नीचे गया तो ओर बहुत अन्धेरा सा दिखने लगा तो वापिस ऊपर आया तब तक तो सूर्यास्त हो ही गया था। तो प्यासा ही बैठा रहा, वृद्ध भी हो गया था। उसने अपने त्याग के साथ रात में पानी भी नहीं पीया और प्राण छोड़ दिये। चारों प्रकार के आहार छोड़ दिये थे। खाद्य, स्वाद्य, लेह्य, पेय। खाद्य में रोटी, भात आदि स्वाद्य में सोंफ, सुपाड़ी आदि, लेह्य में रबड़ी आदि पेय में दूध, पानी आदि इस प्रकार चारों प्रकार के आहार माने जाते हैं। स्वामी कार्तिकेय अनुप्रेक्षा में लिखा है कि जो रात में चारों प्रकार के आहार का त्याग करते हैं उनको एक वर्ष में छः महीने का उपवास का फल मिलता है। ऐसे ही हिन्दू धर्म के पुराण में लिखा है कि एक महीने में 15 दिन का उपवास का फल मिलता है। रात में पानी भी नहीं पीना चाहिए। मध्यप्रदेश के शिक्षा मंत्री मेरे पास अशोक नगर में आये थे। तो लोग बोले कि आइये भोजन कीजिए; तो नहीं मैं करके आया हूँ मैं शाम को छः बजे के बाद कुछ भी नहीं लेता हूँ। अरे! पेय तो ले लीजिये। अरे! महाराजजी मुझे किसने मंत्री बना दिया। पूछा क्यों? तो कहा महाराजजी हमने तो रात में चारों प्रकार के आहार का त्याग किया हुआ है। क्यों; कैसे? हमारी माँ ने ऐसा संस्कार दिया है कि मैं चउविहा करता हूँ रात में पानी भी नहीं पीता हूँ। किसने मंत्री बना दिया। हमने कहा कि अरे! लोग तो बहाने बनाते हैं कि हमें बाहर जाना पड़ता है, वे तो प्रायः बाहर ही घूमते हैं। वे पाँच बजते ही अपना डब्बा खोल कर अपनी कार में ही बैठ के ही खाने लगते हैं। ऐसे मंत्री आज भी हैं। बताइये श्वेताम्बर जैन होकर मिनिस्टर अवस्था में भी हो करके पालते हैं लेकिन कुछ लोग तो बहाने बनाने में बड़े माहिर हैं। एक स्यार ने वह नियम पाला और वह मर करके एक सेठ का पुत्र हुआ। उसका नाम हुआ था प्रीतिंकर, चतुर्थकाल में जन्म हुआ। जो भी पुत्र को देखते थे तो बहुत आनन्द होता था इसलिए प्रीति को उत्पन्न कराने वाला प्रीतिंकर कहलाता था। बहुत वैभव था फिर भी दीक्षा लेकर तपस्या करके मोक्षपद को प्राप्त हुआ। वह देखिये एक स्यार तिर गया तो फिर क्या यह मानव नहीं तिर सकता है। अवश्य तिर सकता है लेकिन पुरुषार्थ की बात है। अपना शरीर रूपी द्रव्य कैसा होना चाहिए यह इन विजय, विजया के कथानक से सुना। सात्विक आहार से उत्तम ध्यान होता है । अशुद्ध आहार अपने अन्दर विकृति को पैदा करता है। जैसे आप लोग कहते हैं न, कि ''जैसे खावे अन्न, वैसे होवे मन। जैसे पीवे पानी वैसे होवे वाणी।।'' जैसा अन्न खाते हैं वैसे भाव उत्पन्न होने लग जाते हैं। चोरी का आहार

दिया जाए तो चोरी के भाव हो जाते हैं और हुआ भी था ऐसा। एक योगी जंगल में रहते थे। निर्ग्रन्थ तो नहीं थे, कपड़े वाले थे। कोई आकर के आहार के लिए बुला ले तो उनके यहाँ चले जाते थे। एक दिन किसी महिला ने बुला लिया। बुला तो लिया लेकिन मान ख्याति के लिए देखो! इसने योगी का आहार अपने घर में करवाया है इस प्रकार सब प्रशंसा करेंगे। ऐसा सोचकर बुला लिया लेकिन व्यवस्था नहीं थी। जितना था उतना परोस दिया। जो कम रह गया तो बाजू वाले घर में गयी और बिना पूछे कुछ सामान ले आयी और उन योगी को परोस दिया। बिना पूछे कुछ भी पर वस्तु उठाना चोरी है। वह चोरी का आहार योगी ने खाया। खाते-खाते ही परिणाम बदल गये। पचने की बात तो अलग है। उनके बाजू में एक सोने की कटोरी रखी थी। उसमें बाती लगायी गयी थी दीपक जैसा बना हुआ था। उसके ऊपर उनकी नियत बिगड़ गयी। चोरी का खाया तो चोरी का भाव हो गया। वह महिला कुछ काम में लग गयी थी तब उन्होंने वह सोने की कटोरी उठायी और अपने डिब्बे में डाल लिया। पानी का डिब्बा लेकर अपनी झोपड़ी में आ गये। आने के बाद आहार पचते-पचते सोचने लगे कि हमने ये क्या कर लिया। कभी भी हमने ऐसा किया नहीं फिर किस कारण हुआ। ये समझ में नहीं आया और ज्यों-ज्यों आहार पचता चला गया त्यों-त्यों उनको पश्चाताप होता गया और पूरा आहार पच गया तो उनके पूरे परिणाम निर्मल हो गये। मैंने बहुत अनर्थ कर दिया। इसको वापिस देकर आना चाहिए। ये तो मेरे कर्त्तव्य के विपरीत है चोरी करना तो महापाप है। तुरन्त चल दिये और जहाँ जिस नगर में जिस घर में आहार हुआ था वहाँ पर गये और उन अम्माजी को सोने की कटोरी वापिस दे दी। अम्माजी कहने लगी अरे! यही तो ढूंढ़ रही थी कि सोने की कटोरी कहाँ गयी, योगी जी तो ले जायेंगे नहीं और कोई आया भी नहीं। योगी जी कहने लगे मैंने तो कुछ नहीं छुपाया, पूरा-पूरा बताया दिया अब तुमने क्या किया वह भी सही-सही बताओ। मैं किसी से नहीं कहूँगा, तुमने जो आहार दिया था वह आहार कैसा था? क्या चोरी का तो नहीं था? उसका सिर नीचे हो गया और कहा योगीजी बहुत बड़ी भूल हो गयी। बता दो। हमारे पास जो वस्तु नहीं थी तो मैं बाजू के घर से बिना पूछे ले आयी और आपकी थाली में परोस दी। बस! समझ में आ गया 'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन' चोरी का आहार दिया तो चोरी का भाव हुए। तो जानिये आज अशुद्ध आहार से विचार बदल रहे हैं। लोगों का मन धर्म से हट रहा है, विलग हो रहा है इसका एक कारण आहारादिक की अज्ञानता तो है ही दूसरा कारण धर्म का प्रचार कम है। तीसरा योगियों का सानिध्य भी कम है। आज का खान-पान बहुत बिगड़ चुका है। बहुत अशुद्धता आ गई है, अन्याय, अनीति से धन कमाया जा रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि विचार-आचार बदल रहे हैं क्योंकि आचार-विचार भी खान-पान पर आधारित हैं। इसलिए कहते हैं आहार शुद्ध होना चाहिए और धन न्याय, नीति से कमाया हुआ होना चाहिए। तभी सम्यक् ध्यान की प्रसिद्धि होना संभव है।

जैन न्यायवादियों या न्यायविदों की गणितीय न्याय में पहुँच

(आधुनिक न्यायशास्त्र के संदर्भ में शोधार्थियों को एक प्रेरणा)

प्रोफेसर एल.सी. जैन, जबलपुर

गतांक से आगे ....

शंकाकार इस पर प्रश्न करता है – 'प्रस्थ से बहिर्भूत पुरुष प्रस्थ से बहिभूत बीजों को प्रस्थ के द्वारा मापता है, यह तो युक्त है, परन्तु लोक के भीतर रहने वाला पुरुष लोक के भीतर रहने वाली मिथ्यादृष्टि जीवराशि को लोक के द्वारा कैसे माप सकता है?'

इसे निर्दोष सिद्ध करने के लिए वीरसेनाचार्य युक्ति देते हैं कि बुद्धि से ही सम्पूर्ण मिथ्यादृष्टि जीव लोक द्वारा मापे जाते हैं। यह कैसे संभव है? इसका समाधान वीरसेनाचार्य इस प्रकार देते हैं- लोकाकाश के एक-एक प्रदेश पर एक-एक मिथ्यादृष्टि जीव को निक्षिप्त करके एक लोक हो गया, इस प्रकार मन से संकल्प करना चाहिए। इस प्रकार पुनः पुनः माप करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि अनन्त लोकप्रमाण होती हैं यहाँ एक-एक संवाद और एक-अनेक संवाद की विधियाँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। यह विधि परम्परा से आई प्रतीत होती है, क्योंकि यहाँ भी इस प्राचीन प्राकृत गाथा को उपयोग करने के लिए उद्धृत किया गया है-

लोगागास पदेसे एक्केक्के णिक्खिवेवि तह दिट्ठि।
एवं गणिज्जगाणे हवंतिलोगा अणंता दु ॥ 23 ॥

इस प्रकार नवीं सदी तक गणितीय न्याय की शैली उपर्युक्त रूप में चली आई।

6. इसके पश्चात् ज्ञापक सूत्र है, 'पूर्वोक्त तीनों प्रमाण ही भावप्रमाण हैं ॥ 5 ॥' अधिगम और ज्ञान प्रमाण दोनों एकार्थवाची हैं। द्रव्य, क्षेत्र, काल प्रमाण के ज्ञान को भावप्रमाण मान लेने पर उसके मुख्य प्रमाण होने से बिना कहे सिद्ध हो जाती है। भाव प्रमाण बहुवर्णनीय है। हेतुवाद और अहेतुवाद को अवधारण करने में समर्थ शिष्यों का अभाव होने से सूत्रों में स्वतंत्रारूप से कथन नहीं हैं।

वस्तुतः परिकर्माष्टक रूप सभी संक्रियाएँ[10] उक्त प्रमाण राशियों के साथ भाव द्वारा काल्पनिक रूप से करना संभव है, जैसा परिमित के साथ, वैसा असंख्येय और अनन्त राशियों के साथ ही। जैसे मिथ्यादृष्टि जीवराशि का संपूर्ण पर्यायों में भाग लेने पर जो भाग लब्ध हो उसे भगहार रूप से स्थापित कर संपूर्ण पर्यायों में भाग के ऊपर खंडित, भाजित, विरलित, उपहृत का कथन भाव प्रमाण की समझ के लिए करना चाहिए। आगे, मिथ्यादृष्टि जीवराशि के विषय में निश्चय करने हेतु पुनः वर्गस्थान में ये संक्रियाएँ दिखाना चाहिये जो पुनः गणितीय न्याय का अनन्तात्मक राशियों तक प्रयोग बतलाती हैं – वर्गस्थान में

खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्प द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि का प्रमाण सुनिश्चित करते हैं। इसका विवरण बारम्बार आया है, न केवल अनन्त वरन् असंख्येय राशियों के लिये भी।

इससे प्रतीत होता है कि अमूर्त्त कल्पनाओं में रहने वाली राशियों में जब ये सभी गणित की संक्रियाएं हो सकती हैं, भाव प्रमाणों में ही, तो भावों का भी गणित होता है, जो पुनः गणितीय न्याय द्वारा पुष्ट किया जाता है। जहाँ एक ओर कैण्टर का अनन्त राशियों का सिद्धान्त जोर पकड़ता जा रहा था, वहाँ उसे परिपुष्ट करने हेतु एक गणित को नयी नींव देने हेतु गणितीय न्याय का रूप ऐसा कुछ निखरा कि न्याय को संदृष्टिमय बनाने का प्रयास होने लगे। इसे Symbolic Logic कहते हैं। प्राचीन एवं मध्य युग में इस तरह का कोई प्रयत्न नहीं दिखाई देता, केवल संदृष्टि एक-दो स्थान में आई पर चर रूप लेकर नहीं। संदृष्टियों के मध्य कोई गणना जैसी वस्तु अन्यत्र नहीं, है तो केवल कर्म सिद्धान्त में अस्पष्ट रूप से प्रकट, परन्तु धवला में शब्दों में ही। विशेष रूप से अधस्तन एवं उपरिम विकल्प में प्राप्य है। बीजाक्षरों द्वारा न्याय का गणित बनाया जाने लगा, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग लाइनित्ज द्वारा किया गया। पश्चात् बूल और दे मार्गो द्वारा इंग्लैण्ड में नवीं सदी के प्रथमार्थ में संदृष्टिमय न्याय की नींव डाली गयी। इनमें प्रथम बार न्याय का कलन, राशियों के कलन के रूप में संक्रियाओं के पूर्ण नियमों सहित अवतरित हुआ। इसका विकास बूलीय बीजगणित रूप में हुआ। भाव राशियों का संदृष्टिमय कलन जैन दिगम्बर अर्थसंदृष्टि अधिकारों में तथा उनसे 400 वर्ष पूर्व कर्णाटक वृत्ति में द्रष्टव्य है।

पूर्व में हम बतला आये हैं कि किस प्रकार कैण्टर के राशि सिद्धान्त में विराधामस आ गया था। जो हमने केवलज्ञान राशि की स्थापना की, सभी सिद्धजीवों एवं केवलियों की भी केवलज्ञान राशि भी मिलाई जावे वह उतनी ही रहेगी। प्रत्येक सिद्ध जीव की केवलज्ञान राशि भी उतनी ही होगी, अतः यहाँ पूर्वापर विरोध उठाने का प्रश्न नहीं उठता है, उससे एक अधिक अविभागी प्रतिच्छेद भी नहीं। उसमें आने वाली अनन्त उपराशियों के मध्य भी अल्प-बहुत्व स्थापित किया गया है। जघन्य और उत्कृष्ट और उनके बीच रहने वाली राशियाँ भी उस अल्प-बहुल गणना में आती हैं। आज उसके लिए शब्द है- 'Comparability'। जब धाराओं द्वारा राशियों को विभिन्न पद स्थानों में उत्पन्न करते हैं, तो इस विज्ञान को स्थल विज्ञान या topology कहते हैं।

पूर्वापर विरोधाभास का सबसे प्राचीन उदाहरण एपीमेनिडीज़ का मिथ्याभास माना जाता है, जो किसी असत्यवादीके सम्बन्ध में है। एपीमेनिडीज नामक क्रिटान का निवासी कहता है - ''मैं झूठ बोल रहा हूँ।'' यदि यह कथन सत्य है तो वह झूठ बोल रहा है और यह कथन झूठ है। यदि वह कथन असत्य है, तो वह झूठ नहीं बोल रहा है अतः कथन सत्य है। इसी प्रकार मान लो काले तख्ते पर एक वाक्य

लिखा है-''काले तख्ते के इस पैनल पर लिखा मात्रा वाक्य असत्य है।'' यदि यह वाक्य सत्य है तो उसे असत्य होना चाहिए और विलोमतः भी।

एक और मनोरंजक पहेली है, जिसे मगर की भ्रान्ति (dilemma) कहा जाता है। मगर ने एक बालक को चुरा लिया है और वह उसके पिता से कहता है- ''मैं बालक को वापिस कर दूंगा यदि तुम सही-सही अंदाज लगाओ कि मैं बालक को वापिस करूँगा या नहीं।'' पिता उत्तर देता है - ''तुम बालक को वापिस नहीं करोगे।'' बतलाओ कि मगर को क्या करना चाहिये?

इसी प्रकार राशि-सिद्धान्त में अनेक प्रकार के वाचन, वाक्य, कथन, ज्ञापक, सूत्र षट्खंडागम, कषायप्राभृत एवं उनकी टीकाओं में आए हुए हैं, जिन्हें न्यायसंगत प्रमाणित करने में श्री वीरसेनाचार्य एवं उनके पूर्वाचार्यों की सामग्री उपलब्ध है। इस पर, गणितीय न्यायशास्त्र विषयक एक ग्रंथ भी बनाया जा सकता है, जो अर्थसंदृष्टिमय हो और आधुनिक राशि-सिद्धान्त के संदर्भ को लिये हुए हो। आज जितना भी आधुनिक न्याय में कार्य हुआ है, वह लाखों पृष्ठों व पत्रों में उपलब्ध है तथा नई विधियों से भरा हुआ है, दर्शन, सिद्धान्त, विज्ञानादि के परिप्रेक्ष्य में यह अंशदान नये आयामों तक ले जा सकता है।

आज का तर्कशास्त्र संकल्पनाओं का विभाजन, वर्गीकरण, परिसीमन और सामान्यीकरण तो करता ही है, साथ ही संकल्पनाओं की व्याप्तियों के साथ संक्रियाओं का ज्ञान भी उपलब्ध कराता है, जैसा दिगम्बर जैन कर्म सिद्धान्तविषय धवला, जयधवला भाव-राशियों का बोध कराने में यही राशि-सिद्धान्त का उपयोग निर्देशित करते हैं। व्यवहार, सत्य एवं निश्चय का निर्णय करने वाली नई विधियों को भी हमें तुलना में रखना है। अचर और चर राशियों के लिए गोम्मटसारादि ग्रंथों में संदृष्टियाँ हैं, किन्तु अनेक गर्भित अभिप्रायों को शब्दों द्वारा निर्देशित किया जाता रहा है अथवा बिना उल्लेख किये समझा जाता रहा है। इन सभी को एक नया संदृष्टिमय रूप देना है, ताकि ज्ञान के नये क्षितिज खुल सकें सम्यक् चिन्तन एवं अनुमान की नवीन विधाएँ, खंडन-मंडन के नये आयाम आदि से भी तुलना करना है। और कर्म-सिद्धान्त के गणित को देखते हुए उसके प्रमाणन की समस्याओं हेतु तर्कशास्त्र या न्याय में नई तकनीकों को लाना है। तर्कशास्त्र के अनेक प्रकार सामने आ चुके हैं, यथा-अंतः प्रज्ञात्मक, रचनात्मक, बहुमूल्यक, निश्चयमात्रिक, सकारात्म, परा-अव्याघातक आदि। इन सभी के दृष्टिकोणों को स्याद्वाद अनेकान्त तथा अन्य विधिपरक जैन न्याय से तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक हो गया है।

अतः श्री वीरसेनाचार्य का अंशदान जो न्याय में कर्मसिद्धान्त विषयक गणित विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ गर्भित है, उसे अब वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है। उसे शोध की वस्तु बनाना अगली पीढ़ी का परम कर्त्तव्य है

सम्यक् ध्यान शतक

– मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

ईं अक्षर जिन बुद्ध वा, हरि ब्रह्मा शिव रूप।
केवलज्ञानी, सार्वमय, जगत वंद्य सुख रूप।।

❖

अर्हं अक्षर श्रेष्ठ है, अर्हत् पद का नाम।
पूज्य रहे जो लोक में, ध्यावें, बनते काम।।

❖

ह्राँ रहा अरिहंत का, वाचक श्रेष्ठ महान।
घातिकर्म का नाश कर, जीवन मुक्त सुजान।।

❖

ह्रीं रहा श्री सिद्ध का, वाचक श्रेष्ठ महान।
अष्ट कर्म का नाशकर, गुण अनन्त की खान।।

❖

ह्रूँ रहा आचार्य का, वाचक श्रेष्ठ महान।
पंचाचार प्रधान हैं, करें सर्व कल्याण।।

❖

ह्रौं श्रेष्ठ वाचक सुधी, उपाध्याय का नाम।
द्वादशाङ्ग के ज्ञान से, मुनि पाते शिवधाम।।

❖

ह्रः अक्षर यह साधु का, वाचक श्रेष्ठ महान।
रत्नत्रय से आत्म में, लीन करें निज ध्यान।।

❖

अग्र ओम् पीछे जहाँ, नमः लगावें साथ।
उपरिम अक्षर जाप दें, बनें लोक में नाथ।।

पिण्डस्थ ध्यान

निजात्म के सम्बन्ध से, सद्गुण–गण का ध्यान।
कहा ध्यान पिंडस्थ वह, जिसमें निज कल्याण।।

❖

दर्शन, सुख चारित्र मय, दश धर्मों से पूर्ण।
शक्ति अनन्त सुकोष निज, गुण अनन्त संपूर्ण।।

पंच धारणाएँ

पंच तरह की धारणा, करता ध्यानी होय।
पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल, और तत्त्व संजोय।।

क्रमशः ....

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे ....

अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

त्र्यधिकदशत्रिशतयुतान्येकत्रिंशत्सहस्रजम्बूनि । सैकाशीतिशतेन प्रहृताति नरैर्वदैकांशम् ।।२५।।
त्रिदशसहस्री सैकाषष्टिद्विशतीसहस्रषट्कयुता । रत्नानां नवपुंसां दत्तैकनरोऽत्र किं लभते ।।२६।।
[2]ऐकादिषडन्तानि क्रमेण हीनानि हाटकानि सखे । विधुजलधिबन्धसंख्यैर्नरैर्हृतान्येकभागः कः।।२७।।
त्र्यशीतिमिश्राणि चतुःशतानि चतुस्सहस्रघ्ननगान्वितानि ।
रत्नानि दत्तानि जिनालयानां त्रयोदशानां कथयैकभागम् ।।२८।।

इति परिकर्मविधौ द्वितीयो भागहारः समाप्तः ।।

वर्गः

तृतीये वर्गपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—

द्विसमवधो घातो वा स्वेष्टोनयुतद्वयस्य सेष्टकृतिः । एकाद्विचयेच्छागच्छयुतिर्वा भवेद्वर्गः ।।२९।।

१ यह श्लोक केवल M में प्राप्य है ।

२ M एकाद्वित्रिचतुःपञ्चषट्कैर्हीनाः क्रमेण संभक्ताः ।
सैकचतुःशतसंयुतचत्वारिंशज्जिनालयानां किम् ।।

बतलाओ ? ।।२५।। ३६२६१ मणि ९ व्यक्तियों को बराबर-बराबर दिये जाते हैं । एक व्यक्ति कितने मणि प्राप्त करता है ? ।।२६।। हे मित्र, एक से आरम्भ कर ६ तक के अंकों को इकाई के स्थान से ऊपर की ओर के क्रम में रखकर और फिर क्रमानुसार ह्रासित अंकों द्वारा संरचित संख्या की सुवर्ण-मुद्राएँ ४४१ व्यक्तियों में वितरित की जाती हैं । प्रत्येक को कितनी मिलती हैं ? ।।२७।। २८४८३ मणि १३ जिन मंदिरों में भेंट स्वरूप दिये जाते हैं । प्रत्येक मंदिर को कितना अंश प्राप्त होता है ? ।।२८।।

इस प्रकार, परिकर्म व्यवहार में, भागहार [भाग] नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

वर्ग

परिकर्म क्रियाओं में तृतीय [वर्ग करने की क्रिया] के नियम निम्नलिखित हैं—

दो सम राशियों का गुणनफल; अथवा दो सम राशियों में से किसी एक चुनी संख्या को प्रथम राशि में से घटाकर प्राप्त फल तथा दूसरी राशि में उस चुनी हुई संख्या को जोड़ने से प्राप्त फल, इन दोनों फलों के गुणनफल में उस चुनी हुई संख्या का वर्गफल जोड़ने पर प्राप्तफल, अथवा, गुणोत्तर श्रेढि (जिसमें प्रथमपद १ है और प्रचय २ है) का अ पदों तक का योगफल, उस इच्छित राशि का वर्ग होता है ।।२९।। दो या तीन या इससे अधिक संख्याओं का वर्ग, उन सब संख्याओं के वर्ग के योग

(२५) यहाँ ३१३१३ को १३ + ३०० + ३१००० द्वारा दर्शाया गया है ।
(२६) यहाँ ३६२६१ को ३०००० + १ + (६० + २०० + ६०००) द्वारा दर्शाया गया है ।
(२७) यहाँ दिया गया भाज्य, स्पष्ट रूप से, १२३४५६५४३२१ है ।
(२८) यहाँ २८४८३ को ८३ + ४०० + (४००० × ७) द्वारा निरूपित किया गया है ।
(२९) बीजगणित द्वारा बतलाये जाने पर यह नियम इस तरह का रूप लेता है—
(i) अ × अ = $अ^२$ (iii) (अ + क) (अ − क) + $क^२$ = $अ^२$ (iii) १ + ३ + ५ + ७ + ...

द्विस्थानप्रभृतीनां राशीनां सर्ववर्गसंयोगः । तेषां क्रमघातेन द्विगुणेन विमिश्रितो वर्गः ॥३०॥
कृत्वान्त्यकृतिं हन्याच्छेषपदैर्द्विगुणमन्त्यमुत्सार्य । शेषानुत्सार्यैवं करणीयो विधिरयं वर्गे ॥३१॥

अत्रोद्देशकः

एकादिनवान्तानां पञ्चदशानां द्विसंगुणाष्टानाम् । त्रतयुगयोश्च रसाग्न्योः शरनगयोर्वर्गमाचक्ष्व ॥३२॥
साष्टात्रिंशत्रिशती चतुःसहस्रैकषष्टिषट्छतिका । द्विशती षट्पञ्चाशन्मिश्रा वर्गीकृता किं स्यात् ॥३३॥
लेख्यागुणेषुबाणद्रव्याणां शरगतित्रिसूर्याणाम् । गुणरत्नाग्निपुराणां वर्गं भण गणक यदि वेत्सि ॥३४॥

तथा उन संख्याओं को एक बार में दो लेकर उनके दुगुने गुणनफल के योग को मिलाने के बराबर होता है ॥३०॥ दाहिनी ओर से बाईं ओर को अङ्क गिनने के क्रम में संख्या के अन्तिम अङ्क का वर्ग प्राप्त करो, और तब इस अङ्क को द्विगुणित कर तथा एक संकेतना के स्थान तक दाहिनी ओर हटा देने के पश्चात्, इस अन्तिम अङ्क को शेष स्थानों के अङ्कों द्वारा गुणित करो । इस तरह संख्या के शेष अङ्कों में प्रत्येक को एक-एक स्थान तक इसी विधि से हटाते जाओ । यह वर्ग करने की विधि है ॥३१॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

१ से लेकर ९ तक तथा १५, १६, २५, ३६ और ७५—इन संख्याओं के वर्ग का मान निकालो ॥३२॥ ३३८, ४६६१ और २५६ का वर्ग करने पर क्या-क्या प्राप्त होगा ? ॥३३॥ हे गणितज्ञ ! यदि तुम जानते हो तो बतलाओ कि ६५५३६, १२३४५ और ३३३३ के वर्ग क्या होंगे ? ॥३४॥

---

(३०) यहाँ स्थान शब्द का स्पष्ट अर्थ संकेतना स्थान होता है । यहाँ एक टीका के निर्वचन के अनुसार वह योग के विघटकों का भी द्योतक है, क्योंकि योग में प्रत्येक ऐसे भाग का स्थान होता है । इन दोनों निर्वचनों के अनुसार नियम ठीक उतरता है ।

जैसे : $(१२३४)^२ = (१०००^२ + २००^२ + ३०^२ + ४^२) + २ \times १००० \times २०० + २ \times १००० \times ३० + २ \times १००० \times ४ + २ \times २०० \times ३० + २ \times २०० \times ४ + २ \times ३० \times ४$

इसी तरह, $(१ + २ + ३ + ४)^२ = (१^२ + २^२ + ३^२ + ४^२) + २(१ \times २ + १ \times ३ + १ \times ४ + २ \times ३ + २ \times ४ + ३ \times ४)$

(३१) निम्नलिखित साधित उदाहरणों द्वारा दाहिने ओर हटाने का उल्लिखित नियम स्पष्ट हो जावेगा । यह महावीर की मौलिक विधि है । इन गणनाओं में स्तम्भों का योग इस प्रकार किया जावे कि किसी भी स्तम्भ के दहाई के अंक बांईं ओर के स्तम्भ में जोड़े जावें ।

१३१ का वर्ग निकालना

$१^२$ =	१				
२ × १ × ३ =		६			
२ × १ × १ =			२		
$३^२$ =			९		
२ × ३ × १ =				६	
$१^२$ =					१
	१	७	१	६	१

१३२ का वर्ग करना

$१^२$ =	१				
२ × १ × ३ =		६			
२ × १ × २ =			४		
$३^२$ =			९		
२ × ३ × २ =				१२	
$२^२$ =					४
	१	७	४	२	४

५५५ का वर्ग करना ।

$५^२$ =	२५				
२ × ५ × ५ =		५०			
२ × ५ × ५ =			५०		
$५^२$ =			२५		
२ × ५ × ५ =				५०	
$५^२$ =					२५
	३०	८	०	२	५

(३३) मूल गाथा में ४६६१ को ४००० + ६१ + ६०० द्वारा निरूपित किया गया है ।

समाशीतित्रिशतसहितं षट्सहस्रं पुनश्च पञ्चत्रिंशच्छतसमधिकं सप्तनिघ्नं सहस्रम् ।
द्वाविंशत्या युतदशशतं[1] वर्गितं तत्त्रयाणां ब्रूहि त्वं मे गणकगुणवन्संगुणय्य प्रमाणम् ॥३५॥

इति परिकर्मविधौ तृतीयो वर्गः समाप्तः ।

वर्गमूलम्

चतुर्थे वर्गमूलपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—

अन्त्यौजादपहृतकृतिमूलेन द्विगुणितेन युग्महृतौ । लब्धकृतिस्त्याज्यौजे द्विगुणदलं वर्गमूलफलम् ॥३६॥

१ P, K और B राशिरेतत्कृतीनाम् ।

६३८७ और तब ७१३५ और तब १०२२, इनमें से प्रत्येक संख्या का वर्ग किया जाता है । हे कुशल गणितज्ञ ! अच्छी तरह गणना करने के पश्चात् मुझे बतलाओ कि इन तीनों के वर्ग क्या होंगे ? ॥३५॥

इस तरह, परिकर्म व्यवहार में, वर्ग नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

वर्गमूल

परिकर्म क्रियाओं में वर्गमूल नामक चतुर्थ क्रिया के सम्बन्ध में निम्नलिखित नियम हैं—

अंकों द्वारा प्रदर्शित संख्या की इकाई के स्थान से बाईं ओर के अन्तिम अयुग्म (विषम) अंक में से बड़ी से बड़ी वर्ग संख्या (अंक) घटाई जाती है; तब इस वर्ग की हुई संख्या को द्विगुणित कर प्राप्त फल द्वारा, शेष संख्या के साथ दाहिने युग्मस्थान की संख्या उतार कर रखने के पश्चात् प्राप्त हुई संख्या में भाग देते हैं । और तब, इस तरह प्राप्त भजनफल का वर्ग, शेष संख्या के साथ दाहिने अयुग्म स्थान की संख्या उतार कर रखने के पश्चात् प्राप्त हुई संख्या में से घटा देते हैं । तब, प्रथम वर्गसंख्या का वर्गमूल और द्वितीय वर्गसंख्या का वर्गमूल, (एक के बाद दूसरी) दाहिनी ओर रखने से प्राप्त संख्या को द्विगुणित कर शेष संख्या के नीचे उतारी हुई संख्या रखकर प्राप्त संख्या में भाग देते हैं; और फिर शेष संख्या के साथ उतारी हुई संख्या रखकर प्राप्त संख्या में से सबसे बड़ी वर्गसंख्या घटाते हैं । इस प्रकार, यह क्रिया अंत तक की जाती है और अंतिम द्विगुणित भाजक संख्या की अर्द्ध संख्या, परिणामी वर्गमूल होता है ॥३६॥

(३५) यहाँ ७१३५ को १३५ + (१००० × ७) द्वारा दर्शाया गया है ।

(३६) इस नियम को स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित उदाहरण नीचे साधित किया जाता है ।

६५५३६ का वर्गमूल निकालना—६।५५।३६

२² = ४

२ × २ = ४) २५ (५
२०
५५

५² = २५

२५ × २ = ५०) ३०३ (६
३००
३६

६² = ३६

२५६ × २ = ५१२) ० (०
०
×

∴ वर्गमूल = ५१२/२ = २५६ ।

क्रमशः ....

जैनमन्दिरों को शिक्षा का केन्द्र बनाइए!

-प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन

प्रत्येक जैनमन्दिर में जैन-ग्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था अवश्य होना चाहिए। प्राचीन परम्परा भी हमारी ऐसी ही रही है और आधुनिक युग की सख्त आवश्यकता भी ऐसी ही प्रतीत होती है। मुगलकाल में जब लगभग पूरे भारत में शिक्षा का भयंकर विनाश हो गया था, तब भी उत्तरभारत में आगरा, अजमेर, सांगानेर आदि अनेक स्थानों पर जैनमन्दिर ही शिक्षा के केन्द्र बने हुये थे और उनमें नित्य विद्वानों द्वारा धर्म, दर्शन, अध्यात्म आदि की महत्त्वपूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती थी। वर्तमान में उत्तरभारत में जीवित आगम-ज्ञान का श्रेय वस्तुतः इन्हीं जैनमन्दिरों के शिक्षा-केन्द्रों को जाता है। इन शिक्षा-केन्द्रों को उस समय 'सैली' या 'अध्यातम सैली' के नाम से जाना जाता था।

जैनधर्म एक ज्ञान-ध्यान-प्रधान धर्म है। उसका दर्शनशास्त्र भी एकदम युक्तिसंगत और वैज्ञानिक है। जैनधर्म के अनुयायियों को तो उसका ज्ञान अवश्य ही होना चाहिए। तथा यह कार्य तभी संभव है जब मन्दिर में जैनशास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन की सुन्दर व्यवस्था हो, वहाँ कोई एक नियमित शास्त्रसभा चलती हो।

अतः जैनमन्दिर के प्रबन्धकों/व्यवस्थापकों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि यदि जैनधर्म को जीवित रखना है तो मन्दिर में एक स्वाध्याय-कक्ष की स्थापना अनिवार्यरूप से करनी चाहिए तथा इसमें कोई भी उपलब्ध विद्वान् नियमित रूप से जैनशास्त्रों को अध्यापन कराता रहे-ऐसी भी व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए। इसी से हमारा आध्यात्मिक एवं सामाजिक दोनों प्रकार का संरक्षण, संवर्धन संभव होगा, अन्यथा हमारी सर्वप्रकार से महाहानि हो जाएगी।

महाकवि राजा भोज ने ''भूपाल-चतुर्विंशतिका'' में जिनमंदिर को '**वाग्देवी-रति-केतनं**' कहा है जिसका अर्थ है कि मन्दिर में नित्य ही माँ सरस्वती को क्रीड़ा करते रहना चाहिए। जिस मन्दिर में माँ सरस्वती क्रीड़ा न करे अर्थात् जिसमें जिनवाणी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था न हो, वह मन्दिर वस्तुतः पूर्ण मन्दिर नहीं माना जा सकता, अपूर्ण मन्दिर ही माना जाएगा। मन्दिर में अनिवार्य रूप से पाई जाने वाली वस्तुओं में जिनप्रतिमा के बाद दूसरे नंबर पर गिनी जानेवाली यदि कोई वस्तु है तो वह शास्त्रसभा ही है।

इसी प्रकार, शास्त्र-सभा के अतिरिक्त यदि सम्भव हो तो एक बालकथा/पाठशाला भी मन्दिर में अवश्य चलनी चाहिए। आजकल के बच्चे बड़े ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण के होते हैं, उन्हें किसी अन्धविश्वास में नहीं रखा जा सकता। जैनधर्म बड़ा ही वैज्ञानिक धर्म है, उसका आचार व विचार-दोनों

ही आज विज्ञान द्वारा पुष्ट हो रहे हैं। ऐसे में यदि हमारे बच्चे इनको समझ जाएं तो उनका स्वयं का भी कल्याण होगा और आगे चलकर जब वे समाज व राष्ट्र के कर्णधार बनेंगे तो अन्य भी हजारों-लाखों लोगों का कल्याण करेंगे।

यदि यह कथा दैनिक रूप से सम्भव नहीं हो तो साप्ताहिक रूप में ही सही, परन्तु चलनी अवश्य चाहिए। यदि अंग्रेजी माध्यम (English Medium) वाले पब्लिक स्कूलों के बच्चे हों तो उस बाल कथा का नाम भी कुछ ऐसा ही रखा जा सकता है- जैसे - Sunday School for Jain Studies, इससे उनमें विशेष आकर्षण उत्पन्न होगा।

जैन बच्चों को तो जैन संस्कृति का ज्ञान अवश्य ही होना चाहिए। अन्यथा आजकल टेलिविजन पर अनेक कार्यक्रमों में ईश्वर को कर्ता-धर्ता-हर्ता बताया जाता है और रामायण-महाभारत की कथा को विपरीत प्रकार से दिखाया जाता है, उसी पर हमारे ये बच्चे विश्वास कर लेंगे और बाद में इन्हें सत्य का ज्ञान-श्रद्धान कराना बहुत कठिन हो जाएगा।

बच्चों में स्मरण करने की भी अद्‌भुत क्षमता होती है। वे अपनी मानसिक एकाग्रता के कारण किसी भी पाठ, स्तुति या ग्रन्थ को शीघ्र कंठस्थ कर सकते हैं, जो उनके जीवन की एक बड़ी उपलब्धि सिद्ध हो सकती है। उसके माध्यम से वे जगत् में व्याप्त दुर्व्यसनों, अन्धविश्वासों और व्यर्थ के तनावों (Tensions) से अपने को बचाकर रख सकते हैं। अन्यथा आजकल लोगों का तन और मन-दोनों ही उनकी गलती जीवनशैली के कारण एकदम बरबाद हो रहा है। उनका पारिवारिक और समााजिक जीवन भी बिखरता चला जा रहा है। वातावरण बड़ा विषाक्त है। ऐसे में यदि एक भी बच्चे को हम इन पाठशालाओं के माध्यम से विवेकी और सच्चरित्र बना सके तो यह उस एक बच्चे का ही महान् उपकार नहीं होगा, अपितु अपने समाज और राष्ट्र की भी महान् सेवा होगी।

मुनिश्री के विहार के साथ सिद्धक्षेत्र श्री गिरनारजी की तीर्थयात्रा का शुभ अवसर

परम पूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का विहार सिद्धक्षेत्र श्री गिरनार जी की ओर हो रहा है। जो भी धर्मप्रेमी बन्धु मुनिश्री के विहार में शामिल होकर पुण्य लाभ अर्जित करना चाहते हैं वे क्रृपया जानकारी हेतु संपर्क करें :-

(1) डॉ. अजित जैन, भोपाल मो.: 09425601161 (2) डॉ. सुधीर जैन, भोपाल मो.: 09425011357
(3) इंजीनियर महेन्द्र जैन, मो.: 9425601832 (4) श्री राजेश जैन 'रज्जन', दमोह मो.: 09425095917
(5) श्री राजेश जैन, फुटेरा सदन, दमोह, मो.: 09425455634

ध्यान, आसन और आहार में मानस स्थिति

मन, प्रबन्ध और ध्यान विभिन्न दर्शनों व विज्ञान के आलोक में एक समीक्षात्मक अध्ययन डी.लिट् की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा से संदर्भित विषय ।

अनुसंधानकर्ता-डॉ. संजय कुमार जैन

आसनों से चंचल मन स्थिर होता ही है, व ध्यान में नियम से विचारों परिणामों में विशुद्धि आती हैं, साथ ही अनेक शारीरिक रोगों से छुटकारा मिलता है।

पंतजलियोग में कहा गया है कि ध्यान, आसन, प्राणायाम, यम, नियम, प्रयाहार, धारणा, समाधि, अष्टांगयोग, जीवन को सफल बनाने की एक कुंजी है। जिस पर चलकर प्रत्येक मानव अपने निर्धारित लक्ष्य को सहजता से प्राप्त कर सकता है। यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान समाधयोष्टावङ्गानि ॥2/29॥ पतंजलि योग सूत्र।।

ध्यान की कुछ उपयोगी प्रक्रियाओं में-

1. **श्वास ध्यान** - श्वास क्रिया द्वारा किया जाता है।
2. **मंत्र ध्यान** - मंत्र का मौन जाप करना चाहिए।
3. **दिनचर्या ध्यान** - दिन भर में किये गये क्रिया-कलापों का एकाग्र होकर स्मरण करना ही दिनचर्या ध्यान कहलाता है।

जैन दर्शन में ध्यान के सोलह भेद व गुणस्थान के अनुरूप ध्यान -

आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान संसार के एवं धर्मध्यान, शुक्ल ध्यान, मोक्ष के कारण हैं।

आर्त्तध्यान - यह दुःख और पीड़ा से होने वाला ध्यान है।

1. **इष्ट वियोग आर्त्तध्यान** - मनोज्ञ वस्तु के वियोग होने पर उसकी प्राप्ति की सतत् चिन्ता करना।
2. **अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान** - अमनोज्ञ वस्तु के प्राप्त होने पर उसके त्याग / छूटने / दूर होने की सतत् चिन्ता करना।
3. **पीड़ा चिन्तन आर्त्तध्यान** - सुख-दुःख के वेदनरूप, वेदना के होने पर उसे दूर करने के लिए सतत् चिन्ता करना।
4. **निदान बंध आर्त्तध्यान**-अनागत भोगों की वांछा के लिए मनःप्रणिधान होना, निदान नामक ध्यान है।

रौद्रध्यान - हिंसा, असत्य, चोरी, विषय संरक्षण के लिए सतत् चिन्तन करना रौद्रध्यान है। वह अविरत और देशविरत के होता है।

1. हिंसानन्दी 2. मृषानंदी 3. चौर्यानन्दी 4. परिग्रहानंदी

धर्मध्यान - धर्म अर्थात् वस्तु स्वभाव से युक्त ध्यान को धर्मध्यान कहते हैं।

1. **आज्ञाविचय धर्मध्यान** - सर्वज्ञ प्रणीत आगम की आज्ञा, प्रमाणता से वस्तु के श्रद्धान का विचार करना आज्ञाविचय है।
2. **अपायविचय धर्मध्यान** - संसारी जीवों के दुःख और मिथ्यात्व को देखकर उसके छूटने का

उपाय का चिन्तन अपायविचय है।

3. **विपाक विचय धर्मध्यान** – कर्मफल के उदय का विचार करना विपाक विचय है।
4. **संस्थान विचय धर्मध्यान** – लोक के आकार का विचार करना संस्थान विचय है।

ज्ञानार्णव आदि में संस्थान विचय धर्मध्यान के चार भेद बतलाये गये हैं–

1. **पिण्डस्थ** – शरीर स्थिर आत्मा का चिन्तन करना पिण्डस्थ धर्मध्यान है।
2. **पदस्थ** – पवित्र ग्रन्थों के अक्षर स्वरूप पदों के आलम्बन से होने वाली एकाग्रता को पदस्थ धर्मध्यान कहते हैं।
3. **रूपस्थ** – रूप अर्थात् अर्हंत आदि किसी भी आकार के आलम्बन होने वाली एकाग्रता को रूपस्थ धर्मध्यान कहते है।
4. **रूपातीत** – यह निरालम्बन स्वरूप होता है।

शुक्ल ध्यान – जिसमें अतिविशुद्ध गुण होते हैं, जिसमें शुचि गुण अर्थात् कषायों के उपशम तथा क्षय का सम्बन्ध हो, कर्मों का उपशम तथा क्षय होता है। आत्मा के शुचि गुण के सम्बन्ध से जो ध्यान होता है और शुक्ल लेश्या होती है वह शुक्लध्यान है। शुक्ल ध्यान के चार भेद हैं। आरम्भ के दो पूर्वविद अर्थात पूर्वज्ञानी श्रुतकेवली के होते हैं तथा अन्त के दो सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती एवं व्युपरतक्रियानिवृत्ति क्रमशः सयोगकेवली और अयोगकेवली जिन के होते हैं।

1. **पृथक्त्ववितर्कवीचार** – वस्तु के द्रव्य गुण पर्याय का परिवर्तन करते हुए चिन्तन करना पृथक्त्ववीचार है। यह उपशांत कषाय नाम के 11 वें गुणस्थान में होता है।
2. **एकत्ववितर्कवीचार** – यह ध्यान व्यंजन और योग के संक्रमण से रहित वस्तु के किसी एक रूप को ध्येय बनाने वाला होता है। मूलाचार के अनुसार यह ध्यान क्षीणमोह नाम के 12 वें गुणस्थानवर्ती जीवों को होता है।
3. **सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती** – 'कार्तिकेयानुप्रेक्षा' के अनुसार केवलज्ञान स्वभाव वाले सयोगी जिन जब सूक्ष्मकाययोग में स्थिर होकर ध्यान करते हैं, तब यह ध्यान होता है। यह तेरहवें संयोगकेवली जिन नामक गुणस्थान में होता हैं। यह ध्यान त्रिकालवर्ती अनन्त सामान्य–विशेषात्मक धर्मों से युक्त छह द्रव्यों का एक साथ प्रकाशन करता है, अतः सर्वगत है।
4. **व्युपरतक्रियानिवृत्ति** – 'भगवती आराधना' अनुसार काययोग का निरोध करके अयोग केवली औदारिक तैजस और कार्मण शरीरों का नाश करता हुआ इस चतुर्थ शुक्लध्यान को ध्याता है। आरम्भ के दो शुक्लध्यान के आलम्बन सहित हैं, शेष दो ध्यान निरालम्ब है। संसारी भव्य पुरुष ध्यान का साधक होता है, उज्ज्वल ध्यान साधन है, मोक्ष साध्य है, तथा अविनश्वर सुख ध्यान का फल है। इस ध्यान में क्रिया अर्थात् योग सम्यक्‌रूप से उच्छिन्न हो जाते हैं और यह चौदहवें अयोगकेवली नामक गुणस्थान में होता है।

क्रमशः ....

दीक्षा जयन्ति 25 वां रजतवर्ष

(महावीर जयन्ती २०१२ से म.ज. २०१३ तक)

सन्तशिरोमणि आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य आध्यात्मिक योगी धर्म-प्रभावक परम पूज्य गुरुवर श्री आर्जवसागर जी मुनि महाराज के पच्चीसवें दीक्षा जयन्ती रजत वर्ष के उपलक्ष्य में श्रावकों द्वारा एक वर्ष की अवधि में सम्पन्न कर सकने योग्य धर्मायतन रक्षा, धर्म प्रभावना व धर्म संस्कार हेतु पच्चीस-पच्चीस की संख्या में पच्चीस सुयोग्य मंगलमय कार्य -

1. 25 धार्मिक पाठशालायें खोलना या उन्हें व्यवस्थित करना या करवाना।
2. 25 धार्मिक रचनाएँ प्रकाशित करना या करवाना ।
3. 25 सिद्धक्षेत्र या अतिशय क्षेत्रों हेतु पूजनादि उपकरण दान देना या दिलवाना।
4. 25 हजार के लगभग वीतराग (णमोकार, ओम् नमः सिद्धेभ्यः आदि) मंत्रों का जाप करना ।
5. 25 सिद्धक्षेत्र या अतिशय क्षेत्रों का दर्शन करना या करवाने में द्रव्य व्यय करना।
6. 25 व्रतियों के लिए धर्मोपकरण दान देना या दिलवाना ।
7. 25 विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई हेतु पूर्ण या 1 वर्ष के लिए पूर्ण व्यवस्था करना या करवाना।
8. 25 समीचीन (निर्ग्रन्थ रचित) शास्त्रों का स्वाध्याय करना या अन्य को भी सुनाना।
9. 25 मण्डल विधान (वीतरागी के गुणगान पूर्वक) करना या अन्य से सम्पन्न करवाना।
10. 25 समीचीन शास्त्र मुनिसंघ में दान देना ।
11. 25 (व्यसन त्यागी जैन) रोगियों का इलाज करवाने द्रव्यदान देना या दिलवाना।
12. 25 काव्य रचनाएँ (मुनिवर द्वारा रचित तीर्थोदय काव्य की विशेषता से संदर्भित) बनाना ।
13. 25 बार अपने घर से आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पास जाकर दर्शन करना ।
14. मुनिवर की विशेषताओं में से किन्हीं 25 विशेषताओं पर मुनिवर के नाम सह कविताएँ रचना ।
15. मुनिवर के साहित्य और उनकी प्रभावना के 25 कार्यों से संदर्भित 5 या 10 पेज के 25 आलेख तैयार करना। अथवा संदर्भित गुरुवर के प्रवचन संग्रह कर प्रकाशन की व्यवस्था करना।
16. 25 मंदिरों में अष्टमंगल द्रव्य दान देना या दिलवाना।
17. 25 जिन मंदिरों में अष्टप्रातिहार्य दान देना या दिलवाना।
18. 25 धार्मिक लोगों को भावविज्ञान पत्रिका का सदस्य बनाना या बनवाना।
19. 25 जिनधर्मी लोगों को सम्मेदशिखर जी की वंदना या पावापुरी और राजगृही की वंदना करवाना ।

20. 25 संस्कृत, प्राकृत या हिन्दी रचनाओं को कण्ठपाठ करना या एक वर्ष तक नित्य पाठन करना।
21. 25 धार्मिक आवासों हेतु भूमिदान व्यवस्था करना या अन्य से करवाना ।
22. 25 धार्मिक आवास दानों की सुव्यवस्था करना या अन्य से करवाना ।
23. 25 वीतराग जिन प्रतिमायें प्रतिष्ठित कराने की व्यवस्था बनाना या अन्य से बनवाना।
24. 25 विद्वानों के विशिष्ठ योगदान पर उन्हें सम्मानित करना ।
25. 25-25 विशेष कार्य करने वाले 25 लोगों को अवार्ड से सम्मानित करना ।

विशेष : 1. जिन महानुभावों के लिए उपर्युक्त बिन्दुओं में से किसी बिन्दु पर सहयोग देकर पुण्यार्जन करने का मानस तैयार हो जाये तो महावीर जयंती 2012 के सुअवसर पर गुरुदेव मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के दर्शनार्थ अवश्य पहुँचकर आशीर्वाद पूर्वक अपना संकल्प दृढ़ करने का परम सौभाग्य प्राप्त करें । साथ ही, भाव विज्ञान परिवार आप सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं का अभिनन्दन करेगा।

2. उपरि लिखित मंगल कार्यों के शुभारम्भ में भगवान महावीर आचरण संस्था समिति के सदस्यों से सम्पर्क करके आप नाम अवश्यक दर्ज करवा दें ताकि हम कार्य सम्पूर्णता पर आपके गुणों को सम्मानित कर कुछ प्रेरणा ले सकें। आपके मंगल गुण हमारे जीवन में हमारा हौसला बढ़ाने व हमारे गुणवर्धन में निमित्त अवश्य बनेंगे एतदर्थ धन्यवाद, जय जिनेन्द्र!

प्रिय मित्र,

बुद्धिमान (के पास और कुछ न होने पर भी) सर्व सम्पन्न होते हैं। बुद्धिहीन के पास चाहे कुछ भी हो कंगाल ही है।

विद्यार्थी-जीवन का काल वास्तव में मानव जीवन का बसन्त काल है, क्योंकि इस काल में बड़ी तीव्रता के साथ विचार और भावनाओं के पत्र और पुष्प जीवन-बेल पर विकसित होते हैं। इसलिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थी अपने समय का सदुपयोग करें। इन लोगों को समझाना है कि मनुष्य की वास्तविक शोभा बाहरी टीम-टाम में न होकर उनके चरित्र और आदतों में होती है। आनंद की बात है कि आदर्श जीवन का बड़ा महत्व समझाने के लिए मेरे गुरुजी मुनि महाराज आर्जवसागरजी इतनी कोशिश समाज की उन्नति के लिए करते रहते हैं।

नमस्कार

S.SRIPALL, I.P.S. (Retd.), FISM
FORMER DIRECTOR GENERAL OF POLICE,
TAMILNADU.

कवि सम्मेलन दिनांक 02.10.2011

सानिध्य : प.पू. आध्यात्म योगी मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ससंघ

स्थान : श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन नसियाँ जी, रामगंजमण्डी

नसियाँ जी में कवि सम्मेलन पहली पहली बार है,
आर्जवसागर मण्डी नगर में आये पहली बार है ॥ टेक ॥

1. शान्तिप्रभु की शान्ति छवि मूरत अनुपम प्यारी है,
सब के दुख को हरने वाली अद्‌भुत है यह न्यारी है,
मन चाहा वो पूरा करती-करती महिमा अपरम्पार है ...... नसियाँ जी में ... ॥ 1 ॥

2. पुण्य उदय इस धरा का आया वर्षायोग पाया है,
संघ सहित मुनिवर जी पधारे ऐसा अवसर आया है,
चातुर्मास हो रहा नगर में-2 हो रही जय-जयकार है ...... नसियाँ जी में ... ॥ 2 ॥

3. सोलहकारण उत्सव आया, श्रावक का संस्कार है,
दश धर्मों का प्रवचन करते जिनवाणी आधार है,
गूंज रही जयकार नगर में-2 आनंद अपार है ...... नसियाँ जी में ... ॥ 3 ॥

4. समवशरण की रचना ऐसी नयनों को मन भाती है,
जैसे प्रभु की साक्षात ही खिरती है वह वाणी है,
धन्यवाद के पात्र हो गये-2 टोग्याजी परिवार है ...... नसियाँ जी में ... ॥ 4 ॥

5. हम सबका भी भाग्य जगेगा इक दिन ऐसा आयेगा,
धरा साक्षी बन जायेगी ये सुन्दर अवसर आयेगा,
गुरु शिष्य का मिलन यही हो-2 भक्तों की दरकार है ...... नसियाँ जी में ... ॥ 5 ॥

रचियता : पदम ''सुरलाया'' रामगंजमंडी

समाधान

हनुमान सिंह गुर्जर

साधन और साध्य में समाधान होना चाहिए।
शुद्धता में दोनों को एक समान होना चाहिए ।।

चलने से पहले मानव को, अनेक राहें दिख जाती हैं।
पथ की भूल भूलैया में फँस, ना बेवजह रोना चाहिए ।।

गलती और कमियों की तो, इस जीवन में कोई कमी नहीं।
किन्तु बेमतलब की बातों को, ना उम्र भर ढोना चाहिए ।।

व्यवहार सतर्कता से करना, हर कर्म का फल रक्षित होगा।
बाधक कहीं जो बन जावे, ना बीज कभी ऐसा बोना चाहिए।।

साध्य परीक्षा लेता पूरी, वह पूर्ण योग्यता चाहता है।
हर कोण से जीवन हो विकसित, ना खाली कोई कोना चाहिए।।

एक ही साधन होता है, किसी एक लक्ष्य को पाने का।
गलत काम में समय लगाकर, ना वक्त हमें खोना चाहिए।।

सच्चा मार्ग दिखाकर पहले, फिर चलना भी सिखला दे जो।
परम पूज्य आर्जव गुरु-सा, एक गुरु अवश्य होना चाहिए ।।

सिन्धुघाटी की सभ्यता और जैन

सिन्धु घाटी की सभ्यता अत्यंत प्राचीन मानी जाती है। हडप्पा और मोहन जोदड़ो से कुछ नग्न मूर्तियाँ मिली हैं, जिन्हें विश्व प्रसिद्ध इतिहासविद् राम प्रसाद चन्दा आदि ने ऋषभदेव और अन्य तीर्थंकरों की कायोत्सर्ग मूर्तियाँ माना है।

श्री चन्दा ने मार्डन रिव्यू जून 1932 में प्रकाशित लेख में कहा है - ''सिन्धु घाटी से प्राप्त मोहरों पर बैठी अवस्था में अंकित देवताओं की मूर्तियाँ ही योग की मुद्रा में नहीं हैं, किन्तु खड़ी अवस्था में अंकित मूर्तियाँ भी योग कायोत्सर्ग मुद्रा को बतलाती हैं। मथुरा म्यूजियम में दूसरी शती की कायोत्सर्ग में स्थित एक ऋषभदेव जिन की मूर्ति है। इस मूर्ति की शैली से सिन्धु से प्राप्त मोहरों पर अंकित खड़ी हुई देवमूर्तियों की शैली बिल्कुल मिलती है। .... ऋषभ या वृषभ का अर्थ होता है बैल और ऋषभदेव के साथ बैल भी अंकित है जो ऋषभ का पूर्ण रूप हो सकता है''

साभार : हमारी संस्कृति हमारी पहचान

मनाया हमने दीक्षा वर्ष महान

श्रीमती संतोष विनायके

मंगलमय है दिवस आज का ।
दीक्षा की जयन्ती मना रहे ।।
सुखमय हो साधना आपकी ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ते रहें ।।
स्वस्थ रहें और बांटे सबको ।
अपना सारा अर्जित ज्ञान ।।
देते रहें स्नेह नित सबको ।
सबसे ही पाये सम्मान ।।
सुखी स्वस्थ रहें आप गुरुवर।
धर्म प्रभावना बनी रहे ।।
अमर रहे यह जीवन आपका ।
हम सब की शुभकामना रहे ।।

प.पू. मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज के चरणों सादर विनयांजलि ।।

निहारिका विनायके

पुण्य कमाये, हर्ष मनाये, धन्य घड़ी इस पावन में ।
करे महोत्सव मिलकर हम सब, ''रेनवाल'' के आंगन में ।।
गुरुवर जो आपका दर्शन करता, उसका जीवन सफल हो जावे।
ऐसे गुरु ''आर्जवसागर'' की दीक्षा जयंती हम मनाये ।।
संसार असार जान कर आपने, विषयो से मन हटाया है।
सत्य संयम शील साधना से, मन को दृढ़ बनाया है ।।
अनेक तीर्थों पर चातुर्मास कर, धर्म की अलख जगाई है।
नगर-नगर और शहर-शहर में, पाठशाला खुलवाईं है।।
ब्रह्म वाक्यमयी वाणी से, धर्म का बोध कराया है।
अनेक ग्रंथों की रचना से, ज्ञान का दीप जलाया है ।।
तत्त्व ज्ञान है भरा हृदय में, भक्तों में बरसाते रहना ।
अनुपम सिंधु आप हो गुरु, हमें आशीर्वाद देते रहना ।।

मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के सानिध्य में धर्म की वर्षा

रामगंजमंडी – परम पूज्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का भव्य वर्षायोग-2011 श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, नसियाँजी, रामगंजमंडी में बहुत ही धर्म प्रभावना के साथ हुआ जिसमें धर्म की अभूतपूर्व वर्षा हुई। 1 अक्टूबर 2011 को मुनिश्री जी के सानिध्य में राजस्थान का चतुर्थ ''धार्मिक पाठशाला सम्मेलन'' का आयोजन किया गया, जिसमें नसीराबाद, जयपुर, किशनगढ़ रेनवाल, रावतभाटा, बौरावद, रामगंजमंडी आदि की अनेक पाठशालाओं के बालक-बालिकाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इन पाठशालाओं में प्रथम नसीराबाद की पाठशाला, रामगंजमंडी द्वितीय तथा रावतभाटा तृतीय स्थान पर रहे। सभी पाठशालाओं का समाज की ओर से सम्मान किया गया एवं पुरस्कार वितरित किये गये एवं दिल्ली से भी यात्रा संघ द्वारा सभी पाठशालाओं को पुरस्कार दिया गया।

2 अक्टूबर 2011 को मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के सानिध्य में धार्मिक कवि सम्मेन आयोजित किया गया, जिसमें कई स्थानीय तथा बाहर से पधारे महिला-पुरुषों ने स्वरचित काव्यों का पाठ किया गया। मुनिश्री ने काव्यपाठ (कविता) लिखना भी सिखाया एवं प्रशिक्षण दिया। इसमें श्री हुनमान सिंह गुर्जर (तहसीलदार) की रचना सराहनीय एवं प्रशंसनीय रही। सभी कवि/कवियत्रियों को समाज की और से सम्मानित किया गया।

16 अक्टूबर 2011 को मुनिश्री के सानिध्य में ''अहिंसा सम्मेलन'' का आयोजन किया गया, जिसमें विश्व हिन्दू परिषद् के अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमान हुकमचंद जी सांवला, इदौर ने अपने उद्‌गार प्रस्तुत कर सबके मन को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने अहिसंक समाज के बीच अहिंसा सम्मेलन करने का कारण बताया कि समाज के कई धर्म प्रेमी बन्धुओं को ''ग्रीन मार्क'' खाद्य पदार्थ पर लगा होना और उसमें हिंसक पदार्थ मिले हुए हों ऐसे कई खाद्य पदार्थों के खाली रैपरों को दिखाकर यह साबित किया कि इन सबमें हिंसक पदार्थ मिले हुए हैं और उन रेपर पर 'E' नम्बर (एनीमल) की जानकारी भी थी। इससे वहाँ उपस्थित पाठशाला के बालक-बालिकाओं एवं अन्य श्रोताओं ने बाजार में बने रेडिमेड खाद्य पदार्थों का त्याग मुनिश्री के सानिध्य में किया। इसके अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी कोटा, जिला उपाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, जयपुर से पधारे श्री डी.आर. जैन, तमिलनाडू से पधारे पं. श्री धन्यकुमार जैन एवं विद्वान अजितदास जैन, चैन्नई ने भी अहिंसा विषय पर प्रकाश डाल अपने विचार प्रस्तुत किये। समाज की और से सभी वक्ताओं का सम्मान किया गया।

16 अक्टूबर से 25 अक्टूबर 2011 तक मुनिश्री के सानिध्य में ''कण्ठ-पाठ प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया जिसमें बड़े उत्साह से 15 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं ने मेरी भावना, वीतराग स्तोत्र, पंच महागुरु भक्ति, दर्शन पाठ एवं गोम्मटेशथुदि इन विषयों में बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा 15 वर्ष से अधिक आयु के वर्ग में प्रतियोगियों ने भक्तामर स्तोत्र, रत्नकरण्डक श्रावकाचार, द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश, तत्त्वार्थसूत्र, छहढाला में हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता में कोटा, रावतभाटा, भवानीमण्डी, भानपुरा आदि कई स्थानों से आये धर्मप्रेमी बन्धुओं ने भाग लेकर पुर्ण्यार्जन किया।

18 अक्टूबर 2011 को मुनिश्री के आशीर्वाद से 32 व्यक्तियों द्वारा ट्रेन से आचार्य श्री विद्यासागर जी के दर्शनार्थ भक्तजन चन्द्रगिरी गए और बड़े भक्ति से आचार्य श्री के दर्शन किये और आचार्य श्री का दिन में कई बार आशीर्वाद प्राप्त किया।

26 अक्टूबर 2011 को मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के सानिध्य में भगवान महावीर स्वामी का 2538 वाँ निर्माण महोत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। प्रातःकाल जिनाभिषेक, पूजा/अर्चना श्रावकों के द्वारा की गई तथा अपार जन समूह के बीच निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इसी दिन मुनिश्री का चातुर्मास निष्ठापन सम्पन्न हुआ। मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जिस प्रकार भगवान महावीर कर्म बंधनों से मुक्त हुए उसी प्रकार मैं भी वर्षायोग के बन्धन से मुक्त हो गया हूँ। समाज की ओर से मुनिश्री से क्षमायाचना की गई। कार्यक्रम के पश्चात् समाज के सभी बालक-बालिकाओं को मिठाई वितरित की गई।

30 अक्टूबर 2011 को पिच्छिका परिवर्तन समारोह मुनिश्री के सानिध्य में अपार जन समूह के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें ग्वालियर, दमोह, जयपुर, नसीराबाद, दाँता रामगढ़, सिंगोली, संघारा, जोबनेर, तमिलनाडू, कोपरगांव, भवानीमण्डी आदि स्थानों से कई श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इसी दिन सिंगोली पाठशाला से आए बच्चों द्वारा मंगलाचरण एवं कव्वाली की प्रस्तुति दी गई। उसके पश्चात् कण्ठपाठ प्रतियोगिता में क्रमशः (1) दर्शनपाठ में प्रथम प्रांजल, द्वितीय जैनीषा एवं तृतीय पुलकित (2) पंचगुरु भक्ति में प्रथम पुलकित, द्वितीय सयानी तृतीय ऋषिका (3) वीतराग स्तोत्र में प्रथम दिव्यांश, द्वितीय ऋषिका एवं तृतीय मिताली (4) गोम्मटेश स्तुति में प्रथम सयानी, द्वितीय दिव्यांश एवं तृतीय ऋषिका (5) मेरी भावना में प्रथम अनुभूति, द्वितीय ऋषिका एवं तृतीय तन्मय इसी प्रकार 15 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में तत्त्वार्थ सूत्र में प्रथम आशीष (कोटा), द्वितीय कल्याणमाला एवं तृतीय आशीष (कोटा), रत्नकरण्डक श्रावकाचार में प्रथम आशीष, द्वितीय कनकमाला व तृतीय कल्याणमाला, इष्टोपदेश में प्रथम कुमारी कोमल, द्वितीय आयुष (कोटा) एवं तृतीय विवेका रही, भक्तामर स्तोत्र में प्रथम खुशबू (शामगढ़), द्वितीय आयुष (कोटा), तृतीय स्थान मोहित जैन एवं उसी में विशेष श्री हनुमान सिंह गुर्जर श्रेष्ठ रहे। द्रव्य संग्रह में आयुष (कोटा) प्रथम, आशीष द्वितीय एवं तृतीय स्थान श्रीमती मंजू रही, छहढाला प्रतियोगिता में प्रथम कल्याणमाला, द्वितीय ललित कुमार एवं तृतीय आयुष (कोटा) रहे।

इसके उपरांत रामगंजमंडी पाठशाला के बच्चों द्वारा प्रस्तुति की गई एवं सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा पुनः मुनिश्री से क्षमा याचना की गई व समस्त दिगम्बर समाज अष्टान्हिका पर्व, मुनिश्री के सानिध्य में मनाने हेतु श्रीफल भेंट किया गया तब मुनिश्री ने मुस्कुराकर कहा कि पुण्य बढ़ाओ कहकर मुस्करा दिया। इस पर दिगम्बर जैन समाज ने जोरदार जयकारे लगाए और पुनः आग्रह किया। इसके पश्चात् तप, संयम एवं नियम के अनुसार पिच्छिका कार्यक्रम में श्री निरंजन डुगरवाल सपत्निक, कैलाशचंद टोंग्या (सपत्निक), हुकुमचंद जी (डेराटू) विकास जैन सपत्निक, प्रोफेसर अमरचंद जैन (सपत्निक), प्रोफेसर जीतमल जैन (सपत्निक) एवं

पुष्पलता बाबरिया ने पिच्छिका में नियम पालन के व्रत लेकर सहभागी हुए। पिच्छिका सजावट का कार्य श्री नसियाँजी से मुनिश्री तक संजना डुंगरवाल एवं ऋषिका बागड़िया ने किया। मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ने प्रवचन में कहा कि मुनि जीवन व मोक्षमार्ग श्रीफल (नारियल) के समान होता है। जिस प्रकार नारियल के छिलके उतारते हैं उसी प्रकार मुनिश्री केशलोंच करते हैं और नारियल पर तीन निशान दिखते हैं उसी प्रकार मुनि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र के प्रतीक हैं और जिस प्रकार श्रीफल बाहर से कठोर और अन्दर से मुलायम होता है उसी प्रकार क्रियाओं में मुनि बाहर से कठोर नियमों का पालन करते हैं। इसी प्रकार आपको भी श्रीफल के अनुसार प्रेरणा लेकर सम्यक्त्व के मार्ग पर चलना चाहिये। मुनिश्री ने समस्त भक्तजनों को बड़ी उदारता से वीतरागता पर चलने का आशीर्वाद प्रदान किया।

समाज का सामूहिक भोज सायंकाल समय पर होकर ठीक 6 बजे गुरुभक्ति और आरती में भक्तजनों ने संगीतमय आरती कर धर्मलाभ प्राप्त किया–

– चक्रेश कुमार जैन, बागड़िया, रामगंजमंडी

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 40वां आचार्य पदारोहण दिवस महोत्सव

चांदखेड़ी (12 नवम्बर) संत शिरोमणी परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 40 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस परम पूज्य अध्यात्मिक योगी मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के पावन सानिध्य में मार्गशीर्ष कृष्ण 2 दिनांक 12.11.11 को श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चांदखेड़ी, खानपुर में भव्य व विशाल रूप में बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमें कोटा, जयपुर, खानपुर, दिल्ली, उज्जैन, भोपाल, कराड़िया (भवानीमंडी) तथा धर्मप्रभावना संघ, रामगंजमंडी आदि कई स्थाने से पधारे हजारे भक्तजनों ने भाग लेकर पुण्य संचय किया। इस समारोह के मुख्य अतिथि खानपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री अनिल जैन, अध्यक्षता श्री कैलाशचंद सर्राफ (कोटा) एवं विशिष्ट अतिथि उपखंड अधिकारी नारायण सिंह चारण थे। प्रारम्भ में आचार्य श्री के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं अध्यक्ष के कर कमलों द्वारा किया गया। श्री दिगम्बर जैन पाठशाला, खानपुर के बालक-बालिकाओं द्वारा मंगलगीत तथा अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन पाठशाला, रामगंजमंडी के बालक-बालिकाओं ने भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिन्होने सबके मन को मोह लिया। आचार्य श्री के जीवन चरित्र पर अमर कुमार जैन, प्रोफेसर, रामगंजमंडी ने अपने उद्‌गार प्रस्तुत किये।

परम पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर जी ने विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिष्य बांस के समान होता है जब उसे गुरु का सानिध्य मिल जाता है तो उसे वे बांसुरी बना देते हैं। जिस शिष्य पर गुरु की कृपा हो जाती है उसका मोक्ष मार्ग प्रशस्त हो जाता है, जीवन सँवर (सफल हो) जाता है। आज वर्तमान में मानव तो बढ़ रहे हैं लेकिन मानवता घटती जा रही है।

मुनिश्री ने कहा कि 40 वर्ष पूर्व राजस्थान की वसुन्धरा नसीराबाद (अजमेर) में आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने मुनि विद्यासागर जी को आचार्य पद से सुशोभित किया और स्वयं नीचे उतरकर सामान्य मुनि के समान उन्हें नमोस्तु करके निवेदन किया कि ''मैं सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण धारण करना चाहता हूँ मुझे अनुग्रहीत करें।'' यह पहली घटना है जब किसी आचार्य ने समाधिमरण संकल्प लेने से पूर्व अपने शिष्य को आचार्य पद दिया। उस समय इस दृश्य को देखकर सभी की आंखे अश्रुपात से भर गईं। मुनिश्री ने कहा कि आचार्यश्री ने अहिंसा का शंखनाद पूरे भारत में किया, ''मांस निर्यात बंद करो, पशु बध बंद करो, गौशला निर्माण करो''। आज आचार्य श्री के हजारों शिष्य-शिष्यायें भारत के कोने-कोने में जैनधर्म की प्रभावना करके 'जिओ और जीने दो' का पावन सन्देश दे रहे हैं।

अन्त में चांदखेड़ी अतिशय क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष गुलाबचन्द तथा समस्त पदाधिकारियों ने विधायक अनिल कुमार जैन, उपखंड अधिकारी नारायण सिंह चारण, रामगंजमंडी के तहसीलदार हनुमान सिंह गुर्जर (जैन), गिरिराज शर्मा, देशराज जोशी, प्रोफेसर अमर कुमार जैन (रामगंजमंडी), डी.आर. जैन (जयपुर), लोकेश एवं सतीश जैन (दिल्ली), अरविन्द जैन, पथरिया, दमोह आदि का सम्मान किया एवं पाठशाला के सभी बालक-बालिकाओं को पुरस्कार वितरित किये।

परम पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के शीतकालीन कराने हेतु धर्म प्रभावना संघ रामगंजमंडी, अतिशय क्षेत्र कमेटी चांदखेड़ी जैन समाज कराड़िया आदि भक्तजनों ने श्रीफल भेंटकर विनती की एवं आशीर्वाद की कामना की। आचार्य श्री के चरणों में निम्न पंक्ति समर्पित -

नन्हा सा फूल हूँ मैं, धूल चरण की बन बैठा ।
जीवन की रह श्वास श्वास में तस्वीर आपकी बना बैठा ।।
आप जीओ हजारे साल गुरुवर यही भावना भाते हैं ।
''40 वें आचार्य पदारोहरण दिवस'' पर शत शत शीश झुकाते हैं ।।

- दौलत जैन, पत्रकार रामगंजमंडी

सूअर के मांस की चर्बी से हो रहा है भारतीय संस्कृति से जुड़े विभिन्न धर्मों का अपमान

यूरोपियन कानूनों के तहत अंतर घटकों की पहचान हेतु नंबर प्रदान किए गए हैं जिसे ई (E) के आगे लिखा जाता है। इस पद्धति को E-Numbering System (ENS) कहा जाता है। E-NUmber को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

100 Colouring Agents; 200 Conservation Agents; 300 Anti-oxidants; 400 Emulsifiers, Stailzers and Thickner; 500 Anti-Coagulants; 600 Taste Enhansers; 900 Modified Starches

यूरोपियन कानून के बाद 'ग्लोबलायजेशन' के चलते भारत में भी प्रणाली लागू की गई जो शाकाहारी प्रेमियों के लिए लाभदायक साबित हो रही है। ऐसे अनेक हैं जिनका स्रोत प्राणीजन्य एवं वनस्पतिजन्य दोनों ही हो सकता है। कुछ ऐसे भी है जो सिर्फ प्राणीजन्य हैं। रासायनिक तथा वनस्पति पर प्रक्रिया करके प्राप्त करना अधिक कठिन व खर्चीला होता है। जबकि अंडा, माँस प्राणियों के शव/अवयवों से उसी Additives की प्राप्ति सहज और सस्ती होती है। कम लागत और अधिक मुनाफे के चक्कर में अधिकतर उत्पादक प्राणीजन्य स्रोत का विकल्प चुन लेते हैं, जो प्रचुर मात्रा में प्राप्त करना उनके लिए कठिन नहीं होता। उत्पादक प्रक्रिया के दौरान बहुत सारी रासायनिक प्रक्रियाओं से गुजरे होने के कारण उत्पादकों के प्रयोगशाल जांच में Additives का नाम तो खोजा जा सकता है किंतु उनका स्रोत खोज पाना अधिकतर Food Laboratory की क्षमता के बाहर है। यहां पर गंभीर विसंगति यह है कि उन्हें प्रयोगशालाओं के दम पर राज्य सरकारों इन उत्पादकों पर कानून के प्रावधानों के उल्लंघन की कार्यवाही करती है। भ्रष्ट व्यवस्था की मिलीभगत से लालची उत्पादक धडल्ले से मांसाहारी अंतरघटकों का प्रयोग कर शाकाहारी ग्राहकों को लुभाने के लिए हरा निशान लगाकर करोड़ों भोले लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करते हैं। बेबस कानून में यह ताकत नहीं कि वह उन्हें रोक सके। संदेह होता है कि संभवतः यही कारण है कि सरकार भी जानबूझकर प्रयोगशालाओं को परिपूर्ण नहीं बना रही है।

सूचना अधिकार के तहत नये सिरे से केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा हैदराबाद व मैसूर की प्रयोगशालाओं में विस्तृत खोजबीन से युक्त आधार देकर जानकारी मांगी गई है। यह सारी प्रक्रिया बहुत समय लेने वाली है। अतः जब तक हम हमारे लक्ष्य नहीं पहुंचे तब तक शाकाहारी प्रेमियों की सुविधा के लिए E-Numbers दे रहे हैं। उत्पादों पर अत्यंत छोटे अक्षरों में लिखा जांच पड़ताल कर ही प्रयोग रोकने का उपभोक्ता स्वयं निर्णय करें।

Animal Derived (प्राणीजन्य स्रोत) E-120, E-422, E-471, E-485, E-488, E-542, E-631, E-904, E-910, E-920, E-921;

Possibly Animal Derived (संभवतः प्राणीजन्य स्रोत) E-252, E-270, E-322, E-325, E-326, E-327, E-430, E-431, E-432, E-433, E-434, E-435, E-436, E-471a, E-470b, E-470c, E-472a, E-472b, E-472c, E-472d, E-472e, E-472f, E-473, E-474, E-475, E-476, E-477, E-478, E-479a, E-480, E-481, E-482, E-483, E-491, E-492, E-493, E-494, E-495, E-570, E-572, E-585, E-626, E-627, E-628, E-629, E-630, E-632, E-633, E-635, E-640 हैं।

जिन हरे निशान वाले पैकिट खाद्य उत्पादकों पर उपरोक्त में से कोई भी E-Number है तो उसे फिलहाल मांसाहारी श्रेणी में रखकर तत्काल प्रयोग रोकने का अनुरोध है। इसके अलावा निम्न ऐसे हैं जो प्राणीजन्य तो नहीं किंतु बच्चों के स्वास्थ्य के लिए विशेष हानिकारक है। स्वास्थ्य दृष्टि से त्याग

करना बेहतर है।

Specifically Harmful to Children विशेष रूप से बच्चों के लिए हानिकारक E-102, E-104, E-107, E-110, E-120, E-122, E-123, E-124, E-128, E-131, E-132, E-133, E-151, E-154, E-155, E-160b, E-162, E-210, E-211, E-212, E-213, E-214, E-215, E-216, E-217, E-218, E-219, E-250, E-251, E-296 हैं।

अंत में निवेदन यही है कि हमारा जैनत्व सुरक्षित रखने हेतु इस अभियान में सक्रिय सहभागी बने। मांसाहारी पदार्थ किसी भी रूप में हमारे घर में प्रवेश न कर पाये। इस संकल्प के साथ इस अभियान को बल प्रदान करें।

साभार : विदर्भ जैन न्यूज, नागपुर

नूतन शोध समाचार

1. **आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के साहित्य एवं श्रीमद् भगवद् गीता का तुलनात्मक शोध** विषय पर डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश से श्री सुधीर कुमार जैन, मो.: 094254-04121, को प्रोफे डॉ. सुरेश आचार्य-के निर्देशन में किए गए शोध कार्य पर पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।
2. **आचार्य विद्यासागर केन्द्रित प्रमुख शोध ग्रन्थों का अनुशीलन संज्ञक शोध** विषय पर श्री रमाशंकर दीक्षित अमरपाटन-सतना, मो. 099938-85056) को अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, से डॉ. सुमेर सिंह बघेल (मो. 094258-69501) के निर्देशन में पीएच.डी. उपाधि प्राप्त हुई।
3. **आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास में आचार्य श्री विद्यासागर जी का योगदान** विषय पर जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, से श्री प्रशांत कुमार जैन, गुना मो.: 099266-17326) को श्री डॉ. दिनकर राव पेंढारकर एवं डॉ. सतीशचन्द्र चतुर्वेदी के निर्देशन में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई।
4. **आचार्य विद्यासागर कृत मूकमाटी का सांस्कृतिक अनुशीलन शोध** विषय पर पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर (छ.ग.) से डॉ. चन्द्रकुमार जैन सहा. प्राध्या. राजनादगाँव मो. 093010-54300) ने डॉ. गणेश खरे, के निर्देशन में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।
5. **आचार्य ज्ञानसागर के संस्कृत महाकाव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन शोध** विषय पर चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से श्री चंद्रमोहन शर्मा, प्रवक्ता-जवाहरलाल नेहरू स्मृति इण्टर कॉलेज सठैडी-खतौली, मुजफ्फरनगर, (उ.प्र.) को डॉ. कपूरचंद जैन, मुजफ्फरनगर (मो. 098971-16012) के निर्देशन में पीएच.डी. की शोधोपाधि प्राप्त हुई।

6. **आचार्य ज्ञानसागर के संस्कृत काव्यों का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन शोध** विषय पर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा से श्री विनय सिंह चन्देल (मो. 094507-29723) को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी के निर्देशन में पीएच. डी. की शोधोपादि प्राप्त हुई।

7. **आचार्य ज्ञानसागर रचित दयोदय चम्पू की समीक्षा** विषय पर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर से राधेसिंह डामोर ने डॉ. संगीता मेहता, (मो. 098265-71464) के मार्गदर्शन में संस्कृत (साहित्य) पर लघु शोध प्रबंध लिखकर एम फिल की उपाधि प्राप्त की।

8. **आचार्य ज्ञानसागर रचित जयोदय महाकाव्य में दाम्पत्य जीवन** विषय पर कुमारी रूचिता द्विवेदी ने डॉ. (श्रीमती) संगीता मेहता के मार्गदर्शन में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से एम.फिल हेतु लघु शोध प्रबंध आलेखित किया।

9. **वीरेन्द्रशर्माभ्युदय काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन** विषय पर डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर के प्रोफेसर (डॉ.) राधावल्लभ त्रिपाठी, के मार्गदर्शन में दिगम्बर जैनाचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की इस कृति पर सुश्री सुलभ जैन, कर्रापुर, (सागर) ने एम.फिल हेतु लघु शोध प्रबन्ध लिखा गया।

10. **आचार्य विद्यासागर विरचित पंचशती का साहित्यिक मूल्यांकन** विषय पर कुरुक्षेत्र वि.वि. कुरूक्षेत्र, हरियाणा से सुशीला यादव ने डॉ. श्री चन्द्र जैन, (मो. 094166-06198) के निर्देशन में एम.फिल हेतु लघु शोध प्रबन्ध लिखा।

11. **चेतना के गहराव में आचार्य विद्यासागर का काव्य चिन्तन** विषय पर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा से विभा तिवारी (मो. 098265-27767) ने डॉ. दिनेश कुशवाहा, के मार्गदर्शन में एम.फिल लघु शोध प्रबंध का आलेखन किया।

12. **आचार्य विद्यासागर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना** विषय पर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा से श्रीमती प्रियंका बौद्ध द्वारा ने डॉ. दिनेश कुशवाहा, (मो. 9425847022) के निर्देशन में एम.फिल हेतु लघु शोध प्रबन्ध लिखा।

देश के उक्त विभिन्न विश्वविद्यालयों से विगत कालावधि में सम्पन्न हुए इन शोध कार्यों के लिए शोधार्थी एवं उनके निर्देशक की बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने अपनी अथक एवं श्रमसाध्य गवेषणा कर ऐसे मौलिक विषयों पर अपनी प्रज्ञा से आपूरित कलम चलाई।

साभार : नितिन कुमार जैन, खरगापुर, जि.-टीकमगढ़ (म.प्र.)

सावधान! अधकचरे ज्ञान से

सन् 1993 में यूरोपियन कानून की तहत भारत में भी खाद्य पदार्थों को दो भागों में वर्गीकृत करते हुए मांसाहार के पैकेट पर लाल चिन्ह एवं शाकाहार के पैकेट पर हरा चिन्ह लगाए जाने का कानून बना दिया गया।

किन्तु फण्डा यह है कि सरकारी अधिसूचना में माँसाहार केअंतर्गत-बाल, पंख, सींग, नाखून, चर्बी, अण्डे की जर्दी को बाहर रखा गया है। इसके चलते कम्पनियों ने अपने उत्पादों में इन अशुद्ध पदार्थों का उपयोग कर हरा चिन्ह लगाकर बाजार में बेच रहे हैं।

कम्पनियों के उत्पादों में ये अशुद्ध वस्तुएँ अन्तर्घटक तत्व (Additives) के रूप में मिलाये गए हैं। इन अन्तर्घटक तत्वों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है जैसे - Colouring Agents, Conservation Agents, Anti-Oxidants, Emulsifiers, Stablizers and Thickener, Anti-Coagulants, Taste Enhansers, Modified Starches.

अन्तर्घटक तत्वों के नाम काफी बड़े होने के कारण पैकेट पर लिखना असंभव होने से भारत सरकार ने भी यूरोपियन कानून की नकल कर अन्तर्घटक तत्वों के लिये E-Numbering System (EN प्रणाली) को लागू किया है।

बाजार में इन खाद्य पदार्थों से बचें

कंपनी Company	आइटम / उत्पाद Item / Product		प्राणी जन्य E नं. Product Source E. No.
पारले PARLE	क्रेक जैक	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	हाईजैक	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	पारले जी	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	मुनैको	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	ऑरेंज क्रीम	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	मैरी	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	क्रीम बोरबन	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	किसमी बार	टॉफी	E-322
	बटर कप	टॉफी	E-322, E-481
	गोल गप्पा	टॉफी	E-471
	फ्रूटी मैंगो	जूस	E-471, E-322, E-481
	पारले 20-20	बिस्किट	E-472, E-322
सनफीस्ट Sunfest	स्पेशल बटर कुकीज		E-472, E-322
	स्पेशल चौको क्रीम		E-322
	सनफीस्ट	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	स्पेशल	बिस्किट	E-322
	स्नैकी जिगजैग	बिस्किट	E-471, E-481
	सनफीस्ट ग्लूकोज	बिस्किट	E-322
कैडबरी Cadbury	5 स्टार	चॉकलेट	E-471, E-476, E-442
	डेरी मिल्क	चॉकलेट	E-476
	बॉर्नवीटा मिल्क पावडर		E-471, E-322
	इकलेयर्स	टॉफी	E-471, E-476
	मिल्क ट्रीट	टॉफी	E-422, E-476
	जेम्स	टॉफी	E-476
नेसले Nastle	मिल्क चॉकलेट	चॉकलेट	E-471, E-476
	मैगी नूडल्स	नूडल्स	E-631, E-627
	मैगी नेसले बोरबन	बिस्किट	E-471

कंपनी Company	आइटम / उत्पाद Item / Product		प्राणी जन्य E नं. Product Source E. No.
प्रिया गोल्ड Priyagold	क्लासिक क्रीम	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	सी.एन.सी.	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
	स्नैक्स जिग जैग	बिस्किट	E-471, E-322, E-481
रिगली Wriegly	सेंटर फ्रेश		E-471, E-422
न्यूट्रीन Nutrine	महालेक्ट्रो		E-322
	जेम्स		E-322, E-746
कैण्डीमैन Candyman	इक्लेयर्स	टॉफी	E-471, E-322
	टॉफी चॉकलेट	टॉफी	E-471, E-322,, E-476
मिन्टो Minto	गोल मिंट	टॉफी	E-904, E=322
पेरीज़ Parry's	कॉफी बाईट	टॉफी	E-471, E-322
बिन्गो Bingo	टोमैटो चिप्स	चिप्स	E-631, E-627
ब्रिटेनिया Britania	50-50	बिस्किट	E-472, E-481
	जिम-जैम	बिस्किट	E-471, E-481, E-322
	गुड डे	बिस्किट	E-471, E-322
	नाइस टाइम		E-471, E-481, E-322
आई.टी.सी. I.T.C.	स्पाइसी टेस्टी ऑरेंज		E-322
	रिच कैश	बिस्किट	E-471, E-481
	चॉको क्रीम	बिस्किट	E-322
कैम्पी फ्रूटस Campy Fruits	चॉको टैडी		E-476, E-322
परफेटी Perfeati	हेप्पीडेन्ट	च्यूइंगम	E- 422, E-322

साभार : मुन्ना लम्हेटा, एन.एस. ट्रेडर्स-संध्या ट्रेडर्स, जबलपुर

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक 100

- ❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5–5 अंक समान हैं।
- ❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- ❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें –

प्र.1 जैन गीता यह अनुवाद है

समयसार का [ ], कषायपाहुड़ का [ ], समणसुत्त का [ ]

प्र. 2 संस्कृत के पञ्चशती में पांच शतक लिखे हैं –

आ. ज्ञानसागर ने [ ], आ. विद्यासागर ने [ ] आ. समन्तभद्र ने [ ]

प्र.3 चैतन्य चन्द्रोदय में स्पष्ट किया गया मुख्य विषय

परिषह [ ], उपयोग [ ], यात्रा [ ] तीर्थ [ ]

प्र. 4 रयण–मंजूषा अनुवाद है

रयणसार का [ ], रत्नकरण्डक का [ ], द्रव्यसंग्रह का [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये –

प्र.5 पञ्चशती के रचयिता की नवीन संस्कृत कृति का नाम चैतन्य चद्रोदय है ? [ ]

प्र.6 नर्मदा नदी के उद्गम स्थल पर स्थित तीर्थ का नाम सर्वोदय तीर्थ है? [ ]

प्र.7 नर्मदा नदी के तट पर नवीन शिलातीर्थ सिद्धवर कूट हैं? [ ]

प्र.8 बड़े बाबा की प्राचीन मूर्ति शिल्पकलाँयुत नये मंदिर में

स न् 2006 म ें वि र ा ज म ा न ह ु इ ं ? [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

प्र.9 बड़ेबाबा मण्डल विधान की रचना .... जी महाराज ने की है।

[चंद्रप्रभसागर, समयसागर, सुव्रतसागर]

प्र.10 गुरुवर आचार्यदेव की कृपा से भाग्योदय तीर्थ एक .... का उत्तम केन्द्र है।

कृपया यहाँ से निकालें

[परिचय, परिणय, शुद्धआरोग्य, राजनैतिक]

प्र.11 गुरुवर आचार्यदेव के शुभाशीष से प्रतिभा स्थली एक .... का पवित्र धाम है।

[सद्संस्कारयुत शिक्षा, घूमने का, चित्र प्रदर्शनी]

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये –

प्र.12 मूकमाटी महाकाव्य के चार खण्डों का नाम कौन–कौन से हैं?

....

....

सही जोड़ी मिलायें :–

प्र.13 विद्याधर से	मल्लिसागर
प्र.14 मलप्पा से	विद्यासागर
प्र.15 श्रीमती से	समयसागर
प्र.16 शांतिनाथ से	समयमति

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :–

प्र.17 समन्तभद्र की भद्रता स्वयंभू स्तोत्र का अनुवाद है [ ]

प्र.18 आचार्य देव शिष्यों के लिए संस्कृत व्याकरण में कातन्त्र पढ़ाते हैं। [ ]

प्र.19 गुरुवर के सकलसंयम का जन्म कर्नाटक में हुआ था? [ ]

प्र.20 आचार्य देव भक्तों व तिथियों से नहीं बंधते एवं संस्कृत प्राकृत के ग्रन्थ मूल से ही स्वयं पठन कर अर्थ बताते हैं? [ ]

प्रतियोगी–परिचय

आधार : आचार्यप्रवर विद्यासागर जी महाराज, उनका साहित्य, उनका योगदान व संघसमुदाय।

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता...

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचनविला, कृष्ण विहार, वी.के. कौल नगर, अजमेर (राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी

प्रो. अमरकुमार जैन

बाजार नं. 1, गोविंद भोजनालय

रामगंजमंडी, जिला-कोटा (राजस्थान)

द्वितीय श्रेणी

श्री रामजीलाल जैन

52/140, वी.टी. रोड, मानसरोबर

जयपुर-302020 (राजस्थान)

तृतीय श्रेणी

श्री जयंतीलाल हीरालाल जैन

तोलकर गली, पोस्ट-परोला-425111

जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)

उत्तर पुस्तिका - सितम्बर 2011

1. 3½ महीने 2. प्रातःकाल में 3. छत्तीस
4. स्वर्णभद्र कूट, 5. ना 6. हाँ 7. हाँ 8. ना
9. दर्शनविशुद्धि भावना 10. भगवान महावीर
11. आठवे गुणस्थान के छठे भाग तक
12. भाद्र, माघ और चैत्र मासों के 30 दिन-30 दिन और आगे पीछे के मासों के एक-एक दिन (पूर्णिमा और एकम सम्बंधी) मिलाकर ऐसे धारणा और पारणा के क्रम से बत्तीस-बत्तीस दिनों तक वर्ष में तीन बार सोलहकारण महापर्व मनाया जाता है।
13. 700 मुनियों का उपसर्ग दूर किया।
14. 700 मुनियों पर उपसर्ग हुआ। 15. श्रावण शुक्ल पूर्णिमा
16. 700 मुनियों के गणनायक
17. सही 18. सही 19. गलत 20. सही

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर
● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता रामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल, रमेशचंद, नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, रामगंजमण्डी
● श्री ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा,

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी
● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री कमलजी काला, जयपुर ● श्री अरुणकाला 'मटरू', जयपुर ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्री नरेश जैन, सूरत (दिल्ली वाले)

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार, गाजियाबाद ● श्री श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर
● श्री ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, जयपुर ● श्री राकेश जैन, रोहिणी, दिल्ली ● श्री कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल
● श्री विजय कुमार जैन, छाबड़ा, जयपुर ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा
● श्रीमती हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी

✳ विशेष सदस्य ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद, अजमेर

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती
श्री राजेश गोकुलप्रसाद जैन

कोपरगाँव

श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक केशरचंद पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

छतरपुर

श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, ललपुरावाले
श्री देवेन्द्र ड्योढ़िया
अध्यक्ष,चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़
श्री राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा
श्री सोनलकुमार संतोषकुमार जैन, खिरियावाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम/गुवाहाटी

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया
श्री नाथूलाल जैन, नलबारी
श्रीमती इंदिरा छाबड़ा, कामरूप
श्रीमती रेखा विनोद जैन, कामरूप
श्रीमती अमरावदेबी जैन सरावगी, रायगंज
श्रीमती सीमा राजेश काला, धुबड़ी
सुश्री बबीता पहाड़िया, कामरूप

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला ड्योड़िया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका
श्री राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री महावीर जी सोगानी
श्री संजय सोगानी
श्री अरूण कुमार सेठी
श्री विनोद पांडया
श्री वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती उन्नति पाटनी
श्रीमती सुनीता कासलीवाल
श्रीमती अनीता वैद्य
श्रीमती पदमा लुहाड़िया
श्रीमती सुनीता काला
श्री प्रमोद काला
श्रीमती निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री साक्षी सोनी
श्री महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर. जैन
श्री दिलीप जैन
श्री टीकमचंद बाकलीवाल
श्री हरीशचंद छाबड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री पुष्पा सोगानी
श्री राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन
श्रीमती पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री पारस सोगानी
श्रीमती अरुणा अमोलक काला
श्री कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती इंद्रा मनीष बज
श्री नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाडूलाल जैन
श्रीमती रानीदेवी सुरेशचंद मौसा
श्रीमती आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती बीना विमलकुमार पाटनी
श्रीमती राखी आशीष सोगानी
श्रीमती चंद्रलेखा महावीरप्रसाद शाह
श्रीमती प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती शांति देवी पांड्या
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर
श्री निर्मल कुमार पाटनी
श्री मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री हरकचंद छाबड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन

श्री प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ .विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ. श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती प्रेम सेठी
श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन
श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
श्री हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री रीतेश बज
श्री अनिल कुमार बोहरा
श्री नवीनकुमार छाबड़ा
श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री महेन्द्र प्रकाश काला
श्री बाबूलाल सेठी
श्री प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री कैलाश फूलचंद पांड्या
डॉ. विजय काला
श्री सम्पतलाल जैन
श्री जीवन्धर कुमार सेठी
श्री सुशील कुमार काला
श्री धर्मचंद रतनलाल जैन
श्रीमती ज्योत्सना पंकज जैन दोषी
श्री अमित अंधिका जैन

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा

श्री सुरेश कुमार जैन (छाबड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोशी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद छाबड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायका
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांवका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन

श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन
श्री संदीप प्रेमचंद जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन
श्री ताराचंद जैन

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, डेह

नसीराबाद

श्री महावीर प्रसाद चंद्रप्रकाश सेठी
श्री ताराचंद पाटनी
श्री शान्तिलाल पाटनी
श्री शान्तिलाल गोधा
श्री शान्तिलाल जैन सोगानी
श्री सुशील कुमार गदिया
एडवोकेट अशोक कुमार जैन
श्री टीकमचंद भागचंद जैन
श्री ताराचंद पारसचंद सेठी
श्री महावीर प्रसाद राजकुमार गदिया
श्री प्रकाश चंद जैन

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छाबड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांड्या
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला
श्री विशाल जैन कैलाश बड़जात्या

पिसानगन

श्री पुखराज पहाड़िया
श्री सज्जन कुमार दोशी
श्री अशोक कुमार राकेश कुमार दोशी

कुचामनसिटी

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांड्या
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांड्या
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन
श्रीमती विमला रमेश चंद्र जैन
श्री सुनील जैन
श्री राजेन्द्र के जैन (चौधरी)
श्री आर.के. जैन, एक्साइज इंसपेक्टर
श्री तेजकुमार एस.एल. जैन
श्री विनय कुमार राजकुमार जैन
श्री सुशील जैन (सुशील आटो)
श्रीमती शांतिबाई जैन

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन
श्रीमती शर्मिला ललितकुमार बज जैन
श्रीमती रंजना रमेशचंद शाह

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी
श्री महावीर प्रसाद जैन लालसवाले (देवीपुरा कोठी)
श्री ज्ञानचंद जैन, फतेहपुर शेखावटी

दाँता-रामगढ़

श्री विजय कुमार कासलीवाल, दाँता
श्री निशांत जैन, दाँता-रामगढ़
श्री राजकुमार काला, दाँता-रामगढ़
श्री विनोद कासलीवाल, दाँता
श्री सुनील बड़जात्या, दाँता-रामगढ़
श्री अमरचंद सेठी, दाँता-रामगढ़
श्री हरकचंद जैन झांझरी, दाँता
श्रीमती मायादेवी कैलाशचंद जैन

रानोली (सीकर)

श्री विनोद कुमार जैन
श्री राजकुमार छाबड़ा
श्री शान्तिलाल रांरा
श्री रतनलाल कासलीवाल
श्री सुभाषचंद छाबड़ा
श्री विकास कुमार काला
श्री ज्ञानचंद बड़जात्या
श्री गुलाबचंद छाबड़ा (डाकुड़ा)
श्री सुशील कुमार छाबड़ा

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमेरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी
श्री गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क
श्री मनीष सुभाषचंद जैन, कैलाश नगर

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन

श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती अनुपमा राहुल जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
श्री रोबिन सी.के. जैन
श्री चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

पूर्णिया (बिहार)

श्री चांदमल जैन

कलकत्ता

श्री हरीशचंद्र जैन
श्री मनी खजांची

बेंग्लुरू

श्री प्रसन्न कुमार जैन छाबड़ा
श्री जयकुमार जैन
श्री रमेश कुमार जैन

ब्यावर

श्री दीपक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार छाबड़ा
श्री धर्मचन्द रांवका जैन
श्री देवेन्द्र कुमार फागीवाला
श्री सारस मल झांझरी
श्री सुशील कुमार जैन बड़जात्या

श्री अशोक कुमार सोगानी
श्री भैरूलाल काला
श्री धरमचन्द जैन
श्री प्रबोध कुमार बाकलीवाल
श्री सुरेश चन्द बड़जात्या
श्री कमल कुमार दगड़ा
श्री शांतीलाल गदिया
श्री सुशील कुमार जैन
श्री पदम चन्द गंगवाल
श्री मयंक जैन
श्री मुकेश कुमार जैन
श्री चिरन्जी लाल पहाड़िया
श्री मनोज कुमार जैन
श्रीमती पुष्पा सोनी
श्री अशोक कुमार काला
श्री विजय कुमार फागीवाला
श्री पारसमल अजमेरा
श्री स्वरूपचन्द रांवका
श्री डॉ. दीपचन्द सोगानी
श्रीपाल अजमेरा
श्री घनश्याम जैन शास्त्री

सुजानगढ़

श्री पारसमल पाण्ड्या

मेड़ता रोड/सिटी (नागौर)

श्री जे.डी. जैन
श्री राजेन्द्र जैन
श्री अमरचंद धर्मचंद पाटनी
श्री रामरतन पाटनी

रामगंज मण्डी, कोटा

श्री शांतिलाल जैन
सुश्री कोमल महावीर जैन
श्री पदम कुमार विमल कुमार जैन
श्री रमेशचंद जी विनायका
श्री अमोलकचंद बागड़िया
श्रीमती उषा बागड़िया जैन
श्री शिखरचंद टोंग्या
श्री प्रकाश विनायका
श्री पदम कुमार राजमल जैन

श्री केवलचंद लुहाड़िया
श्री अजीत कुमार सेठी
श्री महावीर कुमार शाह
श्री अमर कुमार जैन
श्री प्रेमचंद सबड़ा
श्री जयकुमार विनायका
श्री नेमीचंद ठौरा
श्री नाथूलाल जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार नीलेश कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार लालचंद जैन
श्री सुमेरमल पहाड़िया
श्री रामगोपाल सैनी
श्री महेन्द्र कुमार जैन सबद्रा
श्री शिखरचंद्र बागड़िया
श्री चैतन्यप्रकाश जैन
श्री हनुमानसिंह गुर्जर (जैन), तहसीलदार
श्री देशराज जोशी
श्रीमती पदमा विनोदकुमार जैन विनायका
श्रीमती कल्पना विनोद कुमार मित्तल

कोटा

श्री अभिषेक रूपचंद जैन
श्री पीयूषकुमार डॉ. पदमचंद दुगेरिया
श्री कैलाशचंद मोतीलाल जैन
श्री प्रकाशचंद सोहनलाल जैन

सोनकच्छ, देवास

श्री पदमकुमार पियूष कुमार छाबड़ा

पारोला (जलगांव)

श्री जयंतीलाल हीरालाल जैन

झालरपाटन (झालावाड़)

श्री विमल कुमार जैन (पाटोदी)

सिंगोली (नीमच)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पाठशाला

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से **भाव विज्ञान पत्रिका** हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/-☐ पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।

क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य

मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।

☛ सत् साहित्य समीक्षा।

☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।

☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

सूअर के मांस की चर्बी से हो रहा है भारतीय संस्कृति से जुड़े विभिन्न धर्मों का अपमान

आलू चिप्स का फरार नवरात्रि में करने वाले भाईयों बहनों के लिये व सूअर के मांस से निर्मित खाद्य पदार्थों को अभक्ष्य मानने वाले मुसलिम भाईयों के लिये यह खबर दिल को ठेस पहुंचाने वाली हो सकती है लेकिन वास्तविकता को जानने का अधिकार हर भारतीय को है। भारतीयों की आस्था और संस्कृति पर यह सबसे बड़ा खतरा है।

Additives अर्थात अंतर घटक। पदार्थ चाहे शाकाहारी घटकों से बना हो, उसे अपेक्षित स्वाद, स्वरूप, गुणधर्म टिकाऊपन आदि प्रदान करने के लिए जो सैकड़ों प्रकार के हैं, उनमें अनेकों का स्रोत मांसाहारी है। यूरोपियन कानूनों के तहत अंतर घटकों की पहचान हेतु नंबर प्रदान किए गए हैं जिसे ई (E) के आगे लिखा जाता है। इस पद्धति को E-Numbering System (ENS) कहा जाता है।

(विस्तृत विवरण अंदर समाचार में)

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

40 वां आचार्य पदारोहण 12.11.2011 चांदखेड़ी (राजस्थान)

आचार्य पदारोहण दिवस पर मंचासीन धर्मप्रभावक मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ

आचार्य पदारोहण दिवस पर गुरुदेव से साहित्य व आशीष लेते हुए एम.एल.ए. अनिल जैन एवं एस.डी.एम.

आचार्य श्री के 40वें पदारोहण दिवस पर दीप प्रज्ज्वल करते हुए चांदखेड़ी के पदाधिकारीगण

आचार्य पदारोहण दिवस पर स्वतन्त्र जैन, खिमलासा का सम्मान करती हुई चांदखेड़ी की कमेटी

गुरुदेव आर्जवसागर महाराज के गृहावस्था के भाई अरविन्द जैन पत्नी प्रियंका जैन सम्मानित होते हुए

आचार्य पदारोहण दिवस पर देशभर के भक्त गुरुदेव की आरती गाते हुए, चांदखेड़ी में

पुण्यार्जक **श्री ताराचंद मित्तल**
एवं मित्तल परिवार
बाजार नं. 2,
मो.: 09214426735, 0941492431

सौजन्य से
श्री महेश कुमार, अशोक कुमार, महेन्द्र कुमार जैन ठोरा

रामगंजमण्डी, कोटा (राजस्थान)

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)